प्रकाशितवाक्य की पुस्तक

अध्याय 2

संरचना और विषय-वस्तु

Manuscript

thirdmill
Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2021के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडियो अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट्स भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती हैं और हमारे अध्यायों के लिए अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती हैं, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं, संस्थानों, व्यापारों और लोगों के उदार, टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए, और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

परिचय....1
उद्देश्य....1
आशीष के प्रस्ताव....2
श्रापों की चेतावनियाँ....3
विवरण....5
परिचय....6
मसीह का दर्शन....8
मसीह का विवरण....8
सात कलीसियाओं को लिखे गए पत्र....10
आने वाली घटनाएँ....15
सात मुहरें....17
सात तुरहियाँ....20
सात इतिहास....22
सात कटोरे....25
बड़ी वेश्या....26
बेबीलोन पर दंड....26
पवित्र लोगों का राज्य करना....28
मेम्ने की पत्नी....32
उपसंहार....33
वर्तमान प्रयोग....34
सामान्य रणनीतियाँ....34
अतीतवाद....35
भविष्यवाद....36
इतिहासवाद....36
आदर्शवाद....37
एकीकृत रणनीति....38
उपसंहार....40

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक

अध्याय दो

संरचना और विषय-वस्तु

परिचय

मेरे एक मित्र ने मुझे मिस्र के काईरो शहर के बाहर वस्त्रों पर की गई चित्रकारी की एक दुकान में जाने के बारे में बताया। वहाँ कई कमरे थे जिनमें बहुत से लोग एक साथ मिलकर कालीन बुन रहे थे। मेरा मित्र यह देखकर हैरान रह गया कि कैसे कपड़े के ये पतले धागे ऐसे ही अन्य धागों के साथ बुने जाकर चित्रकारी के जटिल नमूनों की रचना करते हैं। धागों की सुंदरता जीवंत हो गई जब उन्हें चित्रकारी में शामिल किया गया। और प्रकाशितवाक्य की पुस्तक वस्त्रों पर की जानेवाली चित्रकारी के समान ही है। यह छोटी-छोटी भविष्यवाणियों से भरी हुई है जो अपने अधिकांश अर्थ को अपने चारों ओर की अन्य भविष्यवाणियों से प्राप्त करती है। और इसका संदेश तब सबसे अधिक स्पष्ट होता है जब हम इस पूरी पुस्तक को पढ़ते हैं, और उस बड़ी तस्वीर को देखते हैं जो यह हमारे लिए प्रकट करती है।

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक पर आधारित हमारी श्रृंखला का यह दूसरा अध्याय है, और हमने इसका शीर्षक "संरचना और विषय-वस्तु" दिया है। इस अध्याय में हम यूहन्ना की पुस्तक की साहित्यिक संरचना पर ध्यान देने के द्वारा इसकी खोज करेंगे और यह भी देखेंगे कि कैसे इसके विभिन्न भाग एक दूसरे के साथ उपयुक्त बैठते हैं।

हम प्रकाशितवाक्य की संरचना और विषय-वस्तु की अपनी खोज का आरंभ पुस्तक को लिखने के यूहन्ना के उद्देश्य को संक्षेप में देखने के द्वारा करेंगे। अगला, हम प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के विवरणों की खोज करेंगे। और अंत में, हम इसके वर्तमान प्रयोग की कुछ सामान्य रणनीतियों का सर्वेक्षण करेंगे। आइए यूहन्ना के उद्देश्य को देखते हुए आरंभ करें।

उद्देश्य

यूहन्ना का प्रकाशितवाक्य लिखने का उद्देश्य लगभग उतना ही जटिल था जितनी जटिल पुस्तक स्वयं है, इसलिए हम इस अध्याय में इसके सारे विवरणों का अध्ययन नहीं कर सकते हैं। परंतु हम इस तरीके से इसके मुख्य उद्देश्यों को अवश्य सारगर्भित कर सकते हैं : यूहन्ना ने प्रकाशितवाक्य की पुस्तक कष्ट सह रहे विश्वासियों को यीशु के पुनरागमन तक विश्वासयोग्य बने रहने के लिए उत्साहित करने हेतु लिखी।

जैसा कि हमने इस श्रृंखला के पहले अध्याय में दर्शाया था, यूहन्ना के सताव सह रहे पाठक अपने विश्वास से पीछे हटने की अनेक परीक्षाओं का अनुभव कर रहे थे। इसलिए यूहन्ना ने इफिसुस, स्मुरना, पिरगमुन, थुआतीरा, सरदीस, फिलदिलफिया, लौदीकिया और शेष संसार को आश्वस्त करने के लिए लिखा कि मसीह उनके कष्टों को जानता है और वह उन्हें इनमें से बाहर निकालेगा। प्रकाशितवाक्य ने यह आश्वासन दिया कि यीशु में उनका महिमामय भविष्य सुरक्षित है, और कि वह अपने सब विश्वासयोग्य अनुयायियों को प्रतिफल देगा।

परमेश्वर के भविष्यवक्ता के रूप में उसकी भूमिका के अनुसार, यूहन्ना का उद्देश्य एशिया माइनर की कलीसियाओं को यीशु द्वारा दिए गए दो संदेशों में दर्शाया गया था। पहला, यूहन्ना ने उन सबको आशीषों के प्रस्ताव दिए जो यीशु के प्रति विश्वासयोग्य थे। और दूसरा, उसने उन सबको श्रापों की

चेतावनियाँ दीं जो अविश्वासयोग्य थे। हम आशीष के प्रस्तावों के साथ आरंभ करके इन दोनों प्रकार के संदेशों का अध्ययन करेंगे।

आशीष के प्रस्ताव

प्रकाशितवाक्य 2:9-10 में स्मुरना की कलीसिया को यूहन्ना द्वारा दिए गए प्रोत्साहन के शब्दों को सुनिए :

> मैं तेरे क्लेश और दरिद्रता को जानता हूँ (परंतु तू धनी है) . . . जो दु:ख तुझ को झेलने होंगे, उन से मत डर। क्योंकि देखो, शैतान तुम में से कुछ को जेलखाने में डालने पर है ताकि तुम परखे जाओ; और तुम्हें दस दिन तक क्लेश उठाना होगा। प्राण देने तक विश्वासी रह, तो मैं तुझे जीवन का मुकुट दूँगा (प्रकाशितवाक्य 2:9-10)।

सारे कष्टों से सुरक्षा की प्रतिज्ञा करने की अपेक्षा, यूहन्ना ने कहा कि स्मुरना की कलीसिया को "दु:ख झेलने होंगे।" परंतु साथ ही, उसने उन्हें आश्वासन दिया कि यदि वे मसीह के प्रति विश्वासयोग्य बने रहते हैं तो, यीशु उन्हें "जीवन का मुकुट" देगा। उनके कष्ट और संभावित मृत्यु केवल अस्थाई ही होंगे, परंतु उनकी आशीषें अनंतकाल की होंगी।

यह प्रोत्साहन महत्वपूर्ण था क्योंकि इसने यूहन्ना के मूल श्रोताओं को आगे आने वाले दर्शनों की ओर उन्मुख किया। इसने उन्हें उन आशीषों के दृष्टिकोण के साथ दर्शनों को पढ़ना सिखाया जो यीशु अपने पुनरागमन के समय अपने विश्वासयोग्य अनुयायियों को देगा। उदाहरण के तौर पर, प्रकाशितवाक्य 20:4 मसीह के साथ राज्य करने की आशीषों के बारे में बताता है।

और सुनिए कि कैसे प्रकाशितवाक्य 21:3-4 उन अंतिम आशीषों का वर्णन करता है जो विश्वासी प्राप्त करेंगे :

> फिर मैं ने सिंहासन में से किसी को ऊँचे शब्द से यह कहते हुए सुना, "देख, परमेश्वर का डेरा मनुष्यों के बीच में है। वह उनके साथ डेरा करेगा, और वे उसके लोग होंगे, और परमेश्वर आप उनके साथ रहेगा और उनका परमेश्वर होगा। वह उनकी आँखों से सब आँसू पोंछ डालेगा; और इसके बाद मृत्यु न रहेगी, और न शोक, न विलाप, न पीड़ा रहेगी; पहली बातें जाती रहीं (प्रकाशितवाक्य 21:3-4)।

भविष्य के दर्शन ने यूहन्ना के पाठकों को परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य रहने के लिए अवश्य प्रोत्साहित किया होगा ताकि वे इन अद्‌भुत आशीषों को प्राप्त कर सकें।

> ऐसे कुछ महत्वपूर्ण स्थान हैं जब प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में परमेश्वर के लोगों को आशीष की प्रतिज्ञा की गई है। आप उदाहरण के तौर पर प्रकाशितवाक्य 2 और 3 के बारे में सोच सकते हैं, और साथ ही उन लोगों से की प्रतिज्ञाओं के बारे में भी जिन्हें पुस्तक के अंत में जय प्राप्त करनेवालों के लिए दोहराया गया है। और यह हमें याद दिलाता है कि परमेश्वर के लोगों के रूप में आशीष की प्रतिज्ञाओं का उद्देश्य हमारे लिए यह है कि यह हमें कष्टों और सताव के समय में दृढ़ बने रहने के लिए प्रोत्साहित करे, अर्थात् हमें यीशु के साथ बने रहने के लिए दृढ़ करे और हमें सदैव उसके उद्देश्यों के साथ जोड़े रखे, परंतु साथ ही हमें सावधानी से

> ऐसे लोगों के समान जीवन जीने के लिए प्रोत्साहित करे जो प्रभु के नाम से जाने जाते हैं ताकि हम प्रभु के लिए पवित्र लोग बन जाएँ।
>
> — डॉ. डेविड डब्ल्यू. चैपमैन

> आशीष के प्रस्तावों का उद्देश्य जिसे हम प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में बार-बार पाते हैं, लगभग वैसा ही है जैसे कि वे पुस्तक की प्रकाशन-संबंधी प्रकृति का भाग हों, क्योंकि वे उन लोगों को आश्वस्त कर रहे हैं कि चाहे उनकी परिस्थिति बुरी है, चाहे अपनी आँखों से वास्तव में जो वे देख रहे हैं वह दर्शाता हो कि वे श्रापित हैं, कष्ट झेल रहें हैं, महत्वहीन हैं, रोम के शत्रु हैं, समाज से बहिष्कृत हैं। सब कुछ उनके विरुद्ध जाता प्रतीत होता है। परंतु यदि हम परदे को हटाकर देखें तो सच्ची कहानी यह है, यदि वे परमेश्वर के वचन और यीशु की गवाही को दृढ़ता से थामे रहें तो परमेश्वर की आशीष का अनुभव करेंगे।
>
> — डॉ. जेम्स एम. हैमिल्टन

यीशु के विश्वासयोग्य अनुयायियों को आशीषों के प्रस्ताव देने के साथ-साथ, यूहन्ना ने अपने उद्देश्य को उन लोगों के विरुद्ध श्रापों की चेतावनियाँ देने के लिए भी व्यक्त किया जो मसीह के प्रति अविश्वासयोग्य थे।

श्रापों की चेतावनियाँ

केवल एक उदाहरण के तौर पर, प्रकाशितवाक्य 3:16 में लौदीकिया की कलीसिया के विरुद्ध यीशु की चेतावनी को सुनिए :

> इसलिये कि तू गुनगुना है, और न ठंडा है और न गर्म, मैं तुझे अपने मुँह में से उगलने पर हूँ (प्रकाशितवाक्य 3:16)।

इन शब्दों ने यूहन्ना के पाठकों को बहुत प्रोत्साहित किया कि वे अपने पापों से पश्चाताप करें और यीशु के प्रति संपूर्ण समर्पण में जीवन बिताएँ। मसीह के मुँह से उगले जाने की चेतावनी ने स्पष्ट रूप से चेताया कि यीशु के विरूद्ध किया गया विद्रोह ईश्वरीय श्रापों की ओर लेकर जाएगा।

इस तरह चेतावनियाँ इसलिए सम्मिलित की गई थीं ताकि यूहन्ना के मूल श्रोता उन दर्शनों को पढ़ें जो परमेश्वर के श्रापों के विषय में जानकारी के साथ आए थे। एक लेखक होने के नाते, यूहन्ना ने इन श्रापों को कई बार दर्शाया ताकि वह झूठे और सच्चे दोनों प्रकार के विश्वासियों को अपने पापों से पश्चाताप करने के लिए प्रोत्साहित करे।

उदाहरण के लिए, कई स्थानों पर यूहन्ना के दर्शनों ने उस दंड का विवरण किया जो पशु की आराधना करनेवालों पर आ पड़ती है। प्रकाशितवाक्य 14 में ये मूर्तिपूजक लोग परमेश्वर के रसकुंड में रौंदे जाते हैं। अध्याय 16 में उन पर बीमारी भेजकर उन्हें यातना दी जाती है। और अध्याय 19-21 में उन्हें आग की झील में डाल कर जला दिया जाता है। ये दर्शन एशिया माइनर की कलीसियाओं के झूठे विश्वासियों के विरूद्ध सच्ची चेतावनियाँ थीं। परंतु इन्होंने सच्चे विश्वासियों को भी प्रोत्साहित किया होगा कि वे उस तरह के व्यवहार और रवैये से बचें जो परमेश्वर के दंड का कारण बनते हैं।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में दंड की चेतावानियों के वास्तव में दो उद्देश्य हैं। एक ओर, उन विश्वासियों के लिए जो विश्वास में दृढ़ खड़े हैं, जो कष्टों को सह रहे हैं, उनके लिए वे एक चेतावनी और प्रतिज्ञा हैं कि न्याय में वास्तव में देरी न्याय का नकारा जाना नहीं है, और यह भी कि वह दिन आ रहा है जब उन लोगों को दंड दिया जाएगा जिन्होंने मसीहियों के जीवनों को दयनीय बना दिया था, या फिर मसीहियों को मार डाला था। दूसरी ओर, आज के समान पहली सदी में भी ऐसी कलीसियाएँ थीं जो अपने चारों ओर की संस्कृति के आकर्षण से बहुत अधिक प्रभावित हो जाती थीं। प्रकाशितवाक्य 17 में यूहन्ना को दिए गए दर्शन में बेबीलोन की वेश्या बहुत ही सुंदर तरीके से सजी हुई है; वह एक तरह से बहुत ही आकर्षक दिख रही है। अब उसके हाथ में पानदान है जिसमें संतों का लहू है, अतः वहाँ से हमें पता चल जाता है कि निर्दयता पर आधारित विलासिता के आकर्षण के प्रतिनिधि के रूप में वह कितनी निर्दयी है, परंतु हम फिर भी परीक्षा में पड़ जाते हैं। और हम अध्याय 2 और 3 में देखते हैं कि कुछ कलीसियाएँ जिनके लिए यूहन्ना ने इस पुस्तक को लिखा वे संस्कृति के प्रलोभन में आकर परीक्षा में पड़ गई थीं। और इसलिए यह विश्वासियों के लिए एक सौम्य चेतावनी है कि वे संस्कृति के प्रलोभन और कामुकता के आनंद की अभिलाषा के कारण भटक न जाएँ।
>
> — डॉ. डेनिस ई. जॉनसन

> प्रकाशिवाक्य की पुस्तक का संदेश वास्तव में यह है कि यह संसार ऐसा मंच है जिस पर बड़ा आत्मिक युद्ध हो रहा है, और उस युद्ध के प्रति हमारे कार्य महत्वपूर्ण हैं, और इस संसार में परमेश्वर के पास एक योजना और उद्देश्य है, और हमें अपने जीवनों को उसके उद्देश्य और योजना के अनुसार जीना है। और इसलिए जो परमेश्वर के उद्देश्यों का विरोध करते हैं, वे इसकी कीमत चुकाएँगे; वे उसके दंड का सामना करेंगे। विश्वासी होने के नाते हमारा दायित्व है कि हम विश्वासयोग्य रहें, और इसलिए प्रकाशितवाक्य की पूरी पुस्तक में जो संदेश बार-बार दिया गया है, वह यह है : थामे रहो, दृढ़ बने रहो, अंत तक दृढ़ बने रहो, क्योंकि परमेश्वर विजय प्राप्त करेगा, और परमेश्वर सर्वोच्च प्रभु है, यद्यपि कभी-कभी ऐसा प्रतीत हो सकता है कि परिस्थितियाँ सही दिशा में नहीं जा रही हैं। और यह सच्चाई कि परमेश्वर बुरे लोगों को को दंड देने और भले लोगों को प्रतिफल देने जा रहा है, हमें उसके संदेश के प्रति विश्वासयोग्यता के साथ, और उसके उद्देश्य और उसकी योजना के प्रति विश्वासयोग्यता के साथ प्रत्युत्तर देने की बुलाहट देती है।
>
> — डॉ. मार्क एल. स्ट्रॉस

इसमें कोई संदेह नहीं कि प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के बहुत से विवरणों को समझना कठिन है। परंतु इसके मुख्य विचार फिर भी काफी स्पष्ट हैं। यूहन्ना का उद्देश्य अपने पाठकों को कष्टों के बीच भी मसीह के प्रति विश्वासयोग्य बने रहने के लिए उत्साहित करना था। परमेश्वर की आशीषों के प्रस्तावों ने उन्हें यीशु के प्रति विश्वासयोग्य बने रहने और भले कार्यों को करने के लिए प्रोत्साहित किया होगा। और उसने उन्हें परमेश्वर के श्रापों की चेतावनियाँ भी दीं ताकि वे पश्चाताप करने को प्रेरित हों। इनमें से एक या दोनो रूपों में, प्रकाशितवाक्य की पुस्तक का प्रत्येक चित्र, प्रतीक और दृश्य विश्वासयोग्य बने रहने के

लिए उत्साहित करता है। और यदि हम इस उद्देश्य को मन में रखें, तो यह हमें इस बात को समझने में सहायता करेगा कि प्रकाशितवाक्य की पुस्तक का आरंभिक मसीहियों के लिए क्या अर्थ था, और इसका हम जैसे आधुनिक पाठकों के लिए क्या अर्थ है।

अब जबकि हमने प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के उद्देश्य का अध्ययन कर लिया है, इसलिए आइए हम अपना ध्यान इसके विवरणों की ओर लगाएँ।

विवरण

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक 1:1-8 में एक छोटे परिचय के साथ आरंभ होती है। इसके बाद, प्रकाशितवाक्य की पुस्तक की संरचना में चार मुख्य दर्शन पाए जाते हैं :

- 1:9-3:22 में मसीह का दर्शन
- 4:1–16:21 में आने वाली घटनाओं के बारे में दर्शन
- 17:1–21:8 में बड़ी वेश्या को दिए गए दंड के विवरण का दर्शन
- प्रकाशितवाक्य 21:9–22:5 में दुल्हन, अर्थात् मेम्ने की पत्नी का दर्शन

चार मुख्य दर्शनों के बाद, 22:6-21 में दिए गए निष्कर्ष के साथ पुस्तक समाप्त होती है।

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक की मुख्य संरचना के चार बड़े दर्शन "आत्मा में" के वाक्यांश के साथ आरंभ होते हैं। यूहन्ना ने अपनी पुस्तक की मुख्य संरचना में नए खंडों के आरंभ को दर्शाने के लिए नियमित रूप से इस भाषा-शैली का प्रयोग किया।

> जब हम इस वाक्यांश की व्याख्या करते हैं जिसका प्रयोग यूहन्ना प्रकाशितवाक्य में चार बार करता है, "तुरन्त मैं आत्मा में आ गया" — कुछ इस तरह का — तो जो देखना सबसे आसान है, वह यह है कि यह बात इन चारों बार घटित होती है, और हर बार जब यह होती है, तो यह प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में एक निर्णायक मोड़ होता है। और इसलिए मैं यह सोचता हूँ कि इस आधार पर हम प्रकाशितवाक्य की पुस्तक को मौटे तौर पर इन भागों में बाँट सकते हैं, जिनमें आपके पास आरंभ में यीशु और कलीसियाओं को लिखे गए पत्र हैं, और फिर बीच के हिस्से में आपके पास सिंहासन और उससे दिए गए निर्णय हैं, और फिर अंत में वेश्या है और तब राजा और फिर उसकी दुल्हन है। और यह वास्तव में प्रकाशितवाक्य की पूरी पुस्तक है।
>
> — डॉ. जेम्स एम. हैमिल्टन

प्रकाशितवाक्य 1:10 में यूहन्ना ने यह लिखा :

> मैं प्रभु के दिन आत्मा में आ गया, और अपने पीछे तुरही का सा बड़ा शब्द यह कहते सुना (प्रकाशितवाक्य 1:10)।

प्रकाशितवाक्य 4:2 में उसने कहा :

> तुरन्त मैं आत्मा में आ गया; और क्या देखता हूँ कि एक सिंहासन स्वर्ग में रखा है, और उस सिंहासन पर कोई बैठा है (प्रकाशितवाक्य 4:2)।

प्रकाशितवाक्य 17:3 में उसने यह कहा :

> तब वह मुझे आत्मा में जंगल को ले गया (प्रकाशितवाक्य 17:3)।

प्रकाशितवाक्य 21:10 में उसने यह लिखा :

> तब वह मुझे आत्मा में एक बड़े और ऊँचे पहाड़ पर ले गया, और पवित्र नगर यरूशलेम को स्वर्ग से परमेश्वर के पास से उतरते दिखाया (प्रकाशितवाक्य 21:10)।

> आत्मा में उठा लिए जाने का उल्लेख एक प्रकार के अनुभव का उल्लेख है जो कि एक भविष्यवक्ता के रूप में यूहन्ना को दिया गया है जिसमें उसे इन प्रतीकात्मक दर्शनों को प्राप्त करने के लिए एक दर्शनात्मक अवस्था में लाया गया। इसकी पृष्ठभूमि वास्तव में पुराने नियम में यहेजकेल की भविष्यवाणी में है जहाँ कई स्थानों पर यहेजकेल कहता है कि आत्मा उसे उठाकर किसी स्थान पर ले गया और उसे वह सब दिखाया जो अन्यथा वह नहीं देख सकता था। मेरे विचार से यह ऐसा अनुभव है जिसे हम पूरी तरह से नहीं समझ सकते। शायद भविष्यवक्ता भी न समझें हों। 2 कुरिन्थियों 12 में पौलुस तीसरे स्वर्ग में उठा लिए जाने के बारे में बात करता है, और वह नहीं जानता था कि ऐसा शरीर में हुआ था या फिर आत्मा में। मुझे नहीं लगता कि वे इसे वास्तव में समझ पाए थे, परंतु यह तो पूरी तरह से स्पष्ट है कि परमेश्वर उन्हें एक परिस्थिति, अर्थात् एक ऐसी अवस्था में रख रहा था, जहाँ से वे सामान्य परिस्थितियों से दर्शन से भरा हुआ प्रकाशन प्राप्त कर सकते थे, और फिर वे फिर इन वचनों को पवित्रशास्त्र के अभिलेखों के द्वारा हम तक ला सकते थे, अर्थात् उन शब्दों में इन्हें बाइबल में रखने के द्वारा जो आत्मा ने उन्हें इन दर्शनों और अनुभवों का वर्णन करने में दिए थे।
>
> — डॉ. डेनिस ई. जॉनसन

हम प्रकाशितवाक्य 1:1-8 में पाए जानेवाले परिचय से आरंभ करके प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के प्रत्येक मुख्य खंड की खोज करेंगे।

परिचय

प्रकाशितवाक्य 1:1-3 में परिचय का आरंभ प्रस्तावना से होता है जिसमें पुस्तक के ईश्वरीय अधिकार पर बल दिया गया है। इसका उद्‌गम पिता परमेश्वर से हुआ, यह यीशु मसीह को दिया गया, और एक स्वर्गदूत के द्वारा इसका परिचय कराया गया। और मसीह के भविष्यवक्ता के रूप में यूहन्ना एक आधिकारिक राजदूत था जिसने यीशु के संदेश को उसकी कलीसियाओं तक पहुँचाया।

पद 4 और 5 में अभिवादन है, जिसमें यूहन्ना ने स्वयं और अपने श्रोताओं का परिचय दिया। विशेषकर, उसने एशिया के रोमी प्रांत की सात कलीसियाओं को संबोधित किया, जो कि एशिया माइनर में थीं। यूहन्ना ने एक अभिवादन को भी जोड़ा : पिता परमेश्वर की ओर से, जिसका वर्णन ऐसे किया गया है कि वह जो है, और जो था, और जो आने वाला है; पवित्र आत्मा की ओर से, जिसकी पूर्णता या

संपूर्णता का प्रतीक सिंहासन के सामने की सात आत्माओं को माना जाता है; और यीशु मसीह की ओर से, जिसे यूहन्ना विश्वासयोग्य साक्षी, मृतकों में से जी उठनेवालों में पहलौठा और पृथ्वी के राजाओं का शासक कहता है।

पद 5-8 में यूहन्ना ने परमेश्वर की स्तुति की, और इस स्तुति ने उसके श्रोताओं के विषय में उसकी मुख्य बातों को प्रकट किया। यूहन्ना ने परमेश्वर की सर्वोच्चता के कारण उसकी स्तुति की, वह इस बात से आश्वस्त था कि परमेश्वर अपने महिमामय उद्देश्यों के लिए संपूर्ण इतिहास में कार्य कर रहा था। उसने यीशु मसीह में छुटकारे के लिए परमेश्वर की स्तुति की, क्योंकि यीशु का जीवन, मृत्यु, पुनरूत्थान और स्वर्गारोहण उस प्रत्येक आशा का आधार था जिसका उल्लेख यूहन्ना ने अपनी पुस्तक में किया था। और अंततः, उसने इस प्रतिज्ञा के लिए परमेश्वर की स्तुति की कि मसीह वापस आएगा, अर्थात् भविष्य की वह महान घटना जब परमेश्वर की प्रत्येक योजना और प्रतिज्ञा पूरी हो जाएगी।

> मसीही लोग आशा की आत्मा में पूरे छुटकारे की हमारी भावी आशा के प्रति प्रत्युत्तर दे सकते हैं। आशा एक सकारात्मक भविष्य के प्रति विश्वास से भरा हुआ पूर्वानुमान है। और आशा की महत्वपूर्ण, व्यावहारिक प्रकृति यह है कि यह हमें प्रफुल्लित करती है, यह हमें दृढ़ बनाती है, यह हमें जीवंत बनाती है, और यह वर्तमान में हमें इस भरोसे में एक तरह का पूर्व-आनंद देती है कि जिस बात की प्रतिज्ञा की गई है वह वास्तविकता अवश्य बनेगी। यह हमें उसके परिणाम की पूर्ण अनिवार्यता के भाव के द्वारा और अधिक उत्साहित करती है जिसके लिए हम अभी परिश्रम कर रहे हैं, यद्यपि हमारे सीमित दृष्टिकोण से वास्तविक परिस्थितियाँ शायद थोड़ी लड़खड़ाती प्रतीत होती हों।
>
> — डॉ. ग्लेन स्कोर्गी

> अंतिम छुटकारा जिसे हम यीशु के द्वारा प्राप्त करने जा रहे हैं, वह अद्भुत रूप से इतना सुंदर और महिमामय है कि हमारा प्रत्युत्तर इस बात के प्रति हमारे संपूर्ण अस्तित्व का संपूर्ण प्रत्युत्तर होना चाहिए जो परमेश्वर ने यीशु मसीह में हमारे लिए किया है और करने की प्रतिज्ञा की है। 1 यूहन्ना 3 से मैं यह समझता हूँ जब यूहन्ना कहता है, "अब हम परमेश्वर की संतान हैं, और अभी तक यह प्रकट नहीं हुआ कि हम क्या कुछ होंगे! इतना जानते हैं कि जब वह प्रकट होगा तो हम उसके समान होंगे। और जो कोई उस पर यह आशा रखता है, वह अपने आप को वैसा ही पवित्र करता है जैसा वह पवित्र है।" यदि परमेश्वर के छुटकारे का उद्देश्य हमें यीशु मसीह के स्वरुप में बदलने का है, यदि हमारे जीवनों में परमेश्वर के छुटकारे का उद्देश्य हमें उसके साथ एक सिद्ध एकता, अर्थात् प्रेमपूर्ण भरोसे और आज्ञाकारिता के सिद्ध संबंध में लाने का है, यदि परमेश्वर के छुटकारे का उद्देश्य हमें उसके प्रेम और उसके आत्मा से भरने का है ताकि अनंतकाल तक हम न केवल स्वर्ग का आनंद लें, बल्कि स्वर्ग सदैव हममें वास करे, तो हमारा प्रत्युत्तर केवल यह हो सकता है : प्रभु हमें इस जीवन में यीशु के इतना समान बना जितना कि एक मनुष्य संभवतया बन सकता है। मुझे नहीं पता कि यह कैसा दिखता है; मुझे नहीं पता कि यह कैसे कार्य करता है, परंतु प्रभु मुझे वह सब बना दे जो तू मुझमें से से बना सकता है। मैं तुझे अपना सब कुछ अर्पण करता हूँ; मैं तुझे अपना जीवन देता हूँ। मैं अपना सर्वस्व तुझे समर्पित करता हूँ। मैं किसी और कार्य के

लिए जीना नहीं चाहता, किसी भी ऐसे कार्य के लिए नहीं जो अब मेरे जीवन में कार्यरत तेरे सिद्ध और पूर्ण छुटकारे से कम हो।

— डॉ. स्टीव ब्लैकमोरे

परिचय के बाद, हम प्रकाशितवाक्य 1:9-3:22 में मसीह के दर्शन और सात कलीसियाओं के लिए इसके अर्थ को पाते हैं।

मसीह का दर्शन

मसीह का दर्शन मसीह के विवरण के साथ आरंभ होता है और एशिया माइनर की सात कलीसियाओं को लिखे मसीह के पत्रों के साथ समाप्त होता है। हम इन सभी खंडों को बारी-बारी से देखेंगे, और इसकी शुरुआत हम प्रकाशितवाक्य 1:9-20 में यूहन्ना द्वारा दिए गए मसीह के विवरण के साथ करेंगे।

मसीह का विवरण

यीशु का विवरण देने से पहले यूहन्ना ने अपने पाठकों के साथ अपने आपको इस बात में पहचानने के द्वारा अपनी एकता को व्यक्त किया कि वह उनके दुखों, मसीह के राज्य, और धैर्यपूर्ण सहनशीलता में उनके उनके साथ है।

कष्टों को सहना हमेशा से ही विश्वासियों के लिए एक वास्तविकता रहा है। परंतु यूहन्ना ने बल दिया कि नए नियम के युग में हमारे कष्टों का विशेष महत्व है। मसीह ने तब कष्टों को सहा जब वह पाप के विरूद्ध खड़ा हुआ। और क्योंकि विश्वासी यीशु के साथ जुड़े हुए हैं, इसलिए हम भी कष्टों को सहते हैं। फिर भी, जब कभी हम कष्ट सहते हैं तो हमारे लिए राहत की बात यह है कि परमेश्वर हमारे साथ उपस्थित है, और यह भी कि वह पूरी सामर्थ्य के साथ हमारी परिस्थिति पर राज्य करता है। प्रत्येक परिस्थिति में — यहाँ तक कि शहादत में भी — हम मसीह की सामर्थ्य के द्वारा बुराई और मृत्यु पर विजय प्राप्त कर रहे हैं।

यूहन्ना ने यह भी दर्शाया कि उसने यह दर्शन तब प्राप्त किया जब वह "आत्मा में था।" यह शायद दर्शाता है कि यूहन्ना आत्मिक उन्माद की अवस्था में था, यद्यपि वह शारीरिक रूप से किसी दूसरी जगह नहीं गया था। यह एक तरीका है जिसमें परमेश्वर ने पुराने नियम में स्वयं को भविष्यवक्ताओं पर प्रकट किया था, जैसा कि हम यहेजकेल 3:12 जैसे अनुच्छेदों में देख सकते हैं।

अंततः यूहन्ना ने यह कहते हुए प्रस्तावना को समाप्त किया कि स्वर्ग की एक वाणी ने उसे आज्ञा दी कि वह इफिसुस, स्मुरना, पिरगुमन, थुआतीरा, सरदीस, फिलदिलफिया और लौदीकिया की कलीसियाओं के लिए दर्शन की ये बातें लिखे।

यीशु के बारे में यूहन्ना का वास्तविक विवरण प्रकाशितवाक्य 1:12 में आरंभ होता है। यीशु सात दीवटों के बीच "मनुष्य के पुत्र" के रूप में चलता फिरता हुआ प्रकट हुआ। इन्होंने उन कलीसियाओं को दर्शाया जो मसीह में परमेश्वर के प्रकाश को इस संसार में लेकर आई थीं जो अब तक अंधकार के वश में था। दीवटों ने यूहन्ना के पाठकों को पुराने नियम के मिलाप वाले तम्बू और मंदिर के साजोसामान की याद भी दिलाई होगी, और साथ ही इस सच्चाई की भी कि यीशु अब परमेश्वर के सिंहासन के समक्ष स्वर्गीय तम्बू में है। पद 1:4 में पहले ही यूहन्ना ने एशिया माइनर की सात कलीसियाओं और परमेश्वर के सामने की दीवटों की सात ज्योतियों के बीच के प्रतीकात्मक संबंध को दर्शा दिया था। मिलाप वाले तम्बू में और बाद में मंदिर में, परमेश्वर ने अपने लोगों के बीच अपनी महिमामय उपस्थिति को प्रकट किया था। और

जिस प्रकार परमेश्वर ने अपनी प्रजा इस्राएल के बीच वास किया था, वैसे ही अब मसीह अपनी कलीसिया में वास करता है।

यीशु भी चोगा पहने और पटुका बाँधे था, और यहूदी मंदिर के महायाजक के समान दिखता था। उसकी आँखें आग की ज्वाला के समान थीं और उसके पाँव उत्तम पीतल के समान थे। उसका शब्द बहुत सी जल-धाराओं की आवाज़ के समान बड़ा शक्तिशाली था, और उसके मुँह से तेज दोधारी तलवार निकलती थी। और उसका चेहरा अपनी महिमा से इतना प्रज्वलित हुआ कि वह सूर्य के समान हो गया। इस प्रकटीकरण ने दर्शाया कि यीशु वैभवशाली, महिमामय, और सामर्थी था।

> जब हम प्रकाशितवाक्य 1 को पढ़ते हैं, तो इस अध्याय की सबसे महत्वपूर्ण बात वह दर्शन है जो हम यीशु मसीह के बारे में देखते हैं। पहली बात जो हमें कहनी चाहिए, वह स्पष्ट रूप से यह है कि यह यीशु की एक प्रतीकात्मक तस्वीर है। यह ऐसी तस्वीर नहीं है जिसे शाब्दिक रूप से बनाया या लिया जाना है। परंतु हमें याद है कि यूहन्ना ने इस पुस्तक को लिखा, जो कि एक पत्र, एक भविष्यवाणी, और साथ ही प्रकाशन का साहित्य भी है, उसने इस पुस्तक को कष्ट सह रहे विश्वासियों के लिए लिखा जिनमें से कुछ यीशु मसीह और सुसमाचार के लिए अपना जीवन बलिदान कर रहे थे। और वे सब सुसमाचार के लिए अपने जीवनों को खो देने के खतरे में जीवन जी रहे थे। अध्याय 1 में हमारे पास मनुष्य के पुत्र के रूप में यीशु मसीह की महिमामय तस्वीर है, और हमारे पास वहाँ यीशु के विभिन्न विवरण हैं। उसने महायाजकीय वस्त्र धारण किए हुए हैं। वही वह मार्ग है जिसमें से होकर हम परमेश्वर की उपस्थिति में प्रवेश करते हैं। यूहन्ना उसका वर्णन ऐसे करता है उसके बाल सफेद हैं, हिम के समान सफेद, जो कि काफी दिलचस्प है क्योंकि वह इसे दानिय्येल 7 से ले रहा है, और दानिय्येल 7 में सफेद बालों वाला व्यक्ति यहोवा है। तौभी यूहन्ना इसे यीशु के लिए लागू करता है, और यह दिखाता है कि यीशु यहोवा के तुल्य है, और कि वह पूर्ण ईश्वरीय है। इस तस्वीर में हम देखते हैं कि यीशु के मुँह में दोधारी तलवार है, जो स्पष्ट रूप से अक्षरशः नहीं है, परंतु यह उसके वचन की उस सामर्थ्य पर जोर देती है जो उसके शत्रुओं को काट और नाश कर सकती है जिससे कलीसिया मसीह में राहत प्राप्त कर सके। हमें वहाँ बताया गया है कि उसका चेहरा महिमा से चमकता है, वह महिमामय प्रभु है। यीशु यूहन्ना से कहता है, "मृत्यु और अधोलोक की कुंजियाँ मेरे ही पास है।" कलीसिया इन्हीं सब बातों का सामना कर रही थी। वे संभावित मृत्यु का सामना कर रहे थे, और इसलिए वे स्वाभाविक रूप से अपने भविष्य के बारे में चिंतित थे। और यूहन्ना इस बात पर बल देता है कि यीशु ही सर्वोच्च प्रभु है, कि वह पुनरुत्थानित है, वह जीवित है, वह ही पहला और अंतिम है, उसने मृत्यु पर विजय पाई है, उन्हें डरने की कोई आवश्यकता नहीं है। नीरो या डोमीशियन, जो भी आप सोचते हैं कि उस समय सम्राट था — जो कि एक विवाद का विषय है — परंतु जो कोई भी रोमी सम्राट हो, क्या ऐसा लगता है कि सब कुछ सम्राट के वश में था, या फिर राजनैतिक अधिकारियों के वश में था? उनके वश में कुछ नहीं था। यीशु राज्य करता है, यीशु शासन करता है। प्रत्येक को उसके साथ तालमेल बैठाना होगा। अतः प्रकाशितवाक्य की पुस्तक मूल रूप से कष्ट सह रही कलीसिया के लिए राहत की पुस्तक है, दृढ़ बने रहने की बुलाहट है, इस बात पर भरोसा रखने के लिए बुलाहट है कि यीशु ही सर्वोच्च और महिमामय प्रभु है। वह दीवटों के मध्य में

> चल फिर रहा है। उन्हें इससे राहत और सामर्थ्य मिलनी चाहिए और उस पर निरंतर आशा और भरोसा रखना चाहिए।
>
> — डॉ. थॉमस आर. श्रेईनर

अब जबकि हमने यूहन्ना द्वारा मसीह के विवरण की जाँच कर ली है, इसलिए आइए हम प्रकाशितवाक्य 2 और 3 में सात कलीसियाओं को लिखे गए यीशु के पत्रों पर ध्यान दें।

सात कलीसियाओं को लिखे गए पत्र

मसीह ने एशिया माइनर में स्थित उन कलीसियाओं को पत्र संबोधित किए, जो कि अब आधुनिक तुर्की का पश्चिमी भाग है। उसने पत्रों को इस क्रम में व्यवस्थित किया जिस क्रम में उनको पहुँचानेवाले व्यक्ति को यात्रा करनी थी। उसने पहले तटीय नगर इफिसुस को पत्र लिखा, फिर उत्तर में स्मुरना को, फिर और आगे उत्तर में ही परगमुन को। फिर उसने दक्षिण-पूर्व दिशा में थुआतीरा को संबोधित करते हुए पत्र लिखा, फिर सरदीस, फिर फिलदिलफिया को, फिर लौदीकिया को पत्र लिखा। ये पत्र यीशु के उन शब्दों का वर्णन करते हैं जिन्हें यीशु ने स्वर्गीय न्यायालय से कहा था, और इनका उद्देश्य कलीसियाओं को आने वाले दर्शनों को समझाना और इनका प्रत्युत्तर देने में प्रेरित करना था।

सामान्य रूपों में, ये सभी पत्र केवल क्रम में थोड़े बदलावों के साथ एक जैसे मूलभूत प्रारूप का अनुसरण करते हैं। इस प्रारूप में ऐसे कई तत्व हैं जो पुराने नियम की भविष्यवाणियों के सदृश हैं और हमें याद दिलाते हैं कि यूहन्ना यीशु के भविष्यवक्ता के रूप में इन कलीसियाओं की सेवा कर रहा था।

पहला, प्रत्येक पत्र एक प्रत्येक कलीसिया के स्वर्गदूत को संबोधित करते हुए आरंभ होता है। कुछ व्याख्याकारों ने इसे प्रत्येक कलीसिया का प्रतिनिधित्व करनेवाले मानवीय संदेशवाहकों के उल्लेख के रूप में लिया है। परंतु स्वर्गीय दर्शन के इस संदर्भ में इस बात की संभावना अधिक है कि वे वास्तविक स्वर्गदूत थे जिन्हें मसीह ने प्रत्येक स्थानीय कलीसिया के लिए नियुक्त किया था। दूसरा, प्रकाशितवाक्य 1 में यीशु की एक विशेषता पर बल देते हुए उसके प्रकटीकरण से मसीह का एक विवरण दिया गया है, जो पत्र के लिए प्रासंगिक है। तीसरा, वहाँ ज्ञान का दावा किया गया है, जो दर्शाता है कि मसीह इन कलीसियाओं और उनके जीवनों के विवरणों को जानता है। चौथा, वहाँ कलीसिया का एक मूल्याँकन किया गया है, जिसमें अक्सर ताड़नाओं के साथ प्रशंसाएँ पाई जाती हैं। पाँचवाँ, वहाँ कलीसिया के बारे में मसीह के मूल्याँकन पर आधारित आशीष के प्रस्ताव और श्राप की चेतावनियाँ पाई जाती हैं। छठा, वहाँ यह प्रतिज्ञा है कि जो जय प्राप्त करेंगे, वे सब अनंत आशीषों के वारिस होंगे। सातवाँ, प्रत्येक पत्र में मसीह की आज्ञा मानने का प्रोत्साहन भी है।

प्रकाशितवाक्य 2 और 3 में के पत्रों के बीच की समानताएँ हमें इस भाग के मुख्य विचारों के बारे में सतर्क करती हैं। मसीह इन कलीसियाओं के न्यायसंगत राजा के रूप में उन्हें संबोधित कर रहा था। वह उनकी वर्तमान परिस्थिति को जानता था और उसके पास उन्हें जाँचने का अधिकार था। उसने उनकी विश्वासयोग्यता को प्रोत्साहित करने के लिए उन्हें आशीषों का प्रस्ताव दिया और श्रापों की चेतावनी दी। और उसने उन्हें स्मरण दिलाया कि अनंत उद्धार केवल उनके लिए है जो क्लेशों और परीक्षाओं पर जय प्राप्त करते हैं। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि ये विषय भी प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के पूरे मुख्य भाग में प्रमुख भूमिका अदा करते हैं।

> यीशु सातों कलीसियाओं को संबोधित सातों पत्रों में कलीसिया से, व्यक्तिगत रूप से प्रत्येक मसीही से चाहता है कि वे उसके प्रति विश्वासयोग्यता दिखाएँ, आज्ञाकारी रहें, और विरोध के रूप में चाहे जो भी हो रहा हो — वहाँ काफ़ी विरोध हो भी रहा है — वे विश्वासयोग्य रहें। अब ध्यान दें, वहाँ सात कलीसियाएँ

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> हैं। सचमुच, उनमें से दो विश्वासयोग्य थीं, और मेरा संकेत स्मुरना की कलीसिया और फिलदिलफिया की कलीसिया की ओर है, और यीशु के पास इन दोनों की प्रशंसा करने के अलावा और कुछ नहीं है। अब इफिसुस और पिरगुमन और थुआतीरा और सरदीस ने प्रशंसा को प्राप्त किया, परंतु साथ ही ताड़ना को भी प्राप्त किया। और फिर आपके पास एक और है, जो सातवीं है, और वह लौदीकिया की कलीसिया है, और लौदीकिया की कलीसिया के लिए प्रशंसा का कोई भी शब्द नहीं है क्योंकि वह आत्म-निर्भर थी।
>
> — डॉ. साइमन जे. किस्टेमेकर

हम प्रकाशितवाक्य 2:1-7 में इफिसुस को लिखे पत्र के साथ आरंभ करके प्रत्येक पत्र को संक्षेप में देखेंगे।

इफिसुस इस पत्र में, यूहन्ना ने यीशु का परिचय एक ऐसे व्यक्ति के रूप में दिया जो अपने दाहिने हाथ में सात तारों को लिए हुए सातों दीवटों के बीच में चलता-फिरता है। इस विवरण ने मसीह की महिमा और सामर्थ्य की ज्योति पर बल दिया।

उनके राजा के रूप में यीशु ने इफिसुस की कलीसिया का एक एक मिश्रित मूल्याँकन दिया। उनमें सही शिक्षाओं के लिए काफ़ी जोश था, और उन्होंने दुष्टतापूर्ण व्यवहार को सहन नहीं किया था। यह बताया गया है कि वे विशेष तौर नीकुलइयों के कामों से घृणा करते थे, जो कि झूठी शिक्षाओं का एक आरंभिक समूह था जिन्होंने शायद अन्यजातियों के कामुकतावाद को मसीही विश्वास में मिला दिया होगा।

परंतु इफिसुस की कलीसिया ने एक बड़ी आलोचना को भी ग्रहण किया। प्रकाशितवाक्य 2:4 में यीशु ने उनसे कहा कि उन्होंने अपने पहले से प्रेम को छोड़ दिया था; उन्होंने मसीह और उसके राज्य के प्रति अपने जोश और उत्साह को खो दिया था। अत: मसीह ने उन्हें चेतावनी दी कि यदि वे पश्चाताप नहीं करते और अपने पहले जैसे उत्साह की ओर नहीं लौटते, तो वह उनके दीवट, अर्थात् स्वर्ग में उनके सम्मान के प्रतीक को हटा देगा। दूसरे शब्दों में, उन्हें अनुशासित किया जाएगा, और हो सकता है कि उखाड़ भी दिया जाए।

स्मुरना स्मुरना की कलीसिया को लिखा गया पत्र प्रकाशितवाक्य 2:8-11 में पाया जाता है। यह यीशु के इस विवरण के साथ आरंभ होता है कि वह "प्रथम और अंतिम है, जो मर गया था और अब जो जीवित हो गया है।"। यह विवरण यीशु की पहचान ऐसे कराता है कि उसने सारी वस्तुओं की सृष्टि की है, और वह सृष्टि के अंतिम लक्ष्य का केंद्र बिंदु है।

यह उन दो पत्रों में से एक पत्र है जिसमें किसी गलती के लिए कोई ताड़ना नहीं है। यह पूरी तरह से स्मुरना की कलीसिया के लिए सहानुभूति और समझ पर केंद्रित है, जिसने अविश्वासी यहूदियों के कारण गंभीर सताव का सामना किया था।

> उदाहरण के तौर पर, हम प्रेरितों के काम और नए नियम की अन्य पुस्तकों में देख सकते हैं कि यीशु के मसीहा होने का दावा एकदम से आराधनालयों को विभाजित करना आरंभ कर देता है। और पौलुस इसका एक बड़ा उदाहरण है जिसे आराधनालय से बाहर निकाल दिया गया था। उदाहरण के तौर पर, इफिसुस में वह एक विद्यालय के सभागृह में जाकर उपदेश देता है, या फिर हम ऐसे विश्वासियों को देखना आरंभ करते हैं जो आराधनालयों की सभाओं में एकत्र होने की अपेक्षा घरों में संगति करते हैं। एक बात जो आरंभ में ही उस संबंध पर बहुत अधिक दबाव डालती है, वह निस्संदेह यह दावा है कि यीशु ही मसीहा है, परंतु साथ ही अन्यजातियों का बड़ी संख्या में आना भी है। हमने यह देखना आरंभ

> किया कि जो मसीहियत का प्रचार कर रहे थे, वे सब जातियों पर यीशु के प्रभु होने का प्रचार कर रहे थे। और हमने अन्यजातियों के प्रत्युत्तर देने को भी देखना आरंभ किया। और इसलिए भोजन के नियमों, ख़तने के नियमों जैसे कई नियम और अधिक दबाव डालने लगे। और हम देखते हैं कि गलातियों की कलीसियाओं के समान इस तरह के विवाद पैदा होने लगे, कि क्या इन अन्यजातियों को व्यवस्था का पालन करना है या नहीं। एक और बात जो कि इस संबंध पर बहुत अधिक दबाव डाल रही थी, वह यह थी कि वे दोनों रोम और रोम की शक्ति से कैसे संबंधित थे। उदाहरण के तौर पर, हम निस्संदेह जानते हैं कि मंदिर 70 ईस्वी में गिरा दिया गया था। और इससे पहले भी, और वह इसलिए कि कैसर के विरूद्ध यहूदियों ने आंदोलन किया था, और इन सब बातों के आधार पर हम देखते हैं कि यहूदी अपनी पहचान को पुनर्स्थापित करने का प्रयास कर रहे थे। और उन्होंने इसके बारे में बात करना आरंभ किया, और यह कैसा लगना चाहिए। और यह मसीहियों और यहूदियों में और अधिक विभाजन को उत्पन्न करता है।
>
> — डॉ. ग्रेग पैरी

स्मुरना की कलीसिया में यहूदियों द्वारा रची गई समस्याओं के बावजूद भी यीशु ने अपने अनुयायियों को विश्वासयोग्यता के लिए प्रोत्साहित किया, और उन्हें उत्साहित किया कि वे उस पर भरोसा रखें क्योंकि उसने मृत्यु पर विजय प्राप्त कर ली है।

पिरगमुन इसके बाद, प्रकाशितवाक्य 2:12-17 में मसीह ने पिरगमुन की कलीसिया को संबोधित किया। इस पत्र में, यूहन्ना ने मसीह का परिचय ऐसे व्यक्ति के रूप में दिया जिसके "पास दोधारी और तेज़ तलवार है।" यीशु के शब्द तेज़ हैं, जो सही और गलत को परख सकते हैं। और ये सीधे तौर पर प्रासंगिक था क्योंकि कलीसिया के प्रति उसका मूल्याँकन सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रकार का था।

सुनिए प्रकाशितवाक्य 2:13-14 में यीशु ने क्या कहा :

> तू मुझ पर विश्वास करने से उन दिनों में भी पीछे नहीं हटा जिनमें मेरा विश्वासयोग्य साक्षी अन्तिपास, तुम्हारे बीच उस स्थान पर घात किया गया जहाँ शैतान रहता है। पर मुझे तेरे विरुद्ध कुछ बातें कहनी हैं (प्रकाशितवाक्य 2:13-14)।

यीशु ने ताड़ना के साथ उसकी प्रशंसा की : कलीसिया नीकुलइयों की शिक्षाओं का इनकार करने में विफल रही थी, साथ ही उन शिक्षाओं का इनकार करने में भी, जो बिलाम से संबंधित थी। इन झूठे शिक्षकों ने बहुत से लोगों को अन्यजातियों के मद्यपान और अनैतिकता में धकेल दिया था। और मसीह ने चेतावनी दी कि यदि वे पश्चाताप नहीं करते तो वह कलीसिया को अनुशासित करेगा।

थुआतीरा. थुआतीरा की कलीसिया को लिखा गया पत्र प्रकाशितवाक्य 2:18-29 में पाया जाता है। यहाँ यूहन्ना ने यीशु का वर्णन शुद्ध करनेवाली आग के रूप में किया, जिसकी आँखें ज्वाला के समान थीं और जिसके पाँव उत्तम पीतल के समान थे। यह विवरण सीधे तौर पर पत्र की विषय-वस्तु से संबंधित है, क्योंकि थुआतीरा की कलीसिया को पवित्र और शुद्ध होने की आवश्यकता थी।

प्रकाशितवाक्य 2:19-20 में यीशु के पास कहने को यह था :

> मैं तेरे कामों, तेरे प्रेम और विश्वास और सेवा और धीरज, को जानता हूँ और यह भी कि तेरे पिछले काम पहलों से बढ़कर हैं। पर मुझे तेरे विरुद्ध यह कहना है कि

> तू उस स्त्री इजेबेल को रहने देता है जो अपने आप को भविष्यद्वक्तिन कहती है, और मेरे दासों को व्यभिचार करने और मूर्तियों के आगे चढ़ाई गई वस्तुएँ खाना सिखलाकर भरमाती है (प्रकाशितवाक्य 2:19-20)।

इफिसुस की कलीसिया के विपरीत, थुआतीरा की कलीसिया ने मसीह के प्रति अपने पहले प्रेम को नहीं खोया था। इसकी अपेक्षा, उनका प्रेम वास्तव में और बढ़ गया था। परंतु उन्होंने एक ऐसी स्त्री की झूठी शिक्षाओं को ग्रहण किया था, जिसे यीशु निंदात्मक रूप से "इजेबेल" कहता है।

1 और 2 राजाओं में उल्लिखित बदनाम रानी इजेबेल के समान इस स्त्री ने भी लोगों को लैंगिक अनैतिकता और मूर्तिपूजा, अर्थात् एशिया माइनर के अन्यजातियों में पाई जानेवाली संबंधित कुरीतियों से भरमा दिया था। यीशु ने इस कलीसिया को चेतावनी दी कि वह इन झूठी शिक्षाओं को त्याग दे और उसके प्रति विश्वासयोग्य बनी रहे।

> मेरे विचार से प्रेम और उत्साह को यदि दीर्घकालिक बनना है, और मसीह के समान बनना है, तो इसे ठोस धर्मशिक्षा के साथ जोड़ने की आवश्यकता है। मेरे विचार से कुछ लोगों के पास प्रेम और उत्साह के लिए एक भावनात्मक दान होता है, परंतु इन छियासठ प्रमाणिक पुस्तकों में परमेश्वर ने जो कहा है उसकी मजबूत समझ के बिना यह भावनात्मक दान मेरे विचार से बड़ी आसानी से व्यर्थ हो जाएगा। दूसरी ओर, मेरे विचार से कुछ लोग ऐसे हैं जिनके पास अध्ययन करने का भावनात्मक दान है, और वे समझना चाहते हैं, और वे जानना चाहते हैं कि इस धर्मशिक्षा का क्या अर्थ है, और उनमें निश्चित तौर पर प्रेम की कमी होती है। वास्तव में ये लोग यदि सावधान नहीं रहते हैं तो फरीसीवादी बन जाते हैं। वे सारी सही बातों को जान सकते हैं, परंतु मनुष्य और परमेश्वर दोनों के लिए प्रेम, लगन, और उत्साह के बिना वे निश्चित तौर पर अवसर को खो देते हैं।
>
> — डॉ. मैट फ्रीडमैन

> यह हमारे लिए महत्वपूर्ण है कि हम इस प्रश्न पर ध्यान दें कि यीशु के लिए हमारा उत्साह और प्रेम ठोस, बाइबल आधारित धर्मशिक्षा के साथ क्यों जुड़ा होना चाहिए। सचमुच, यह एक आवश्यक और बहुत ही सक्रिय संयोजन है, जब आप अपने हृदय के उत्साह को अपने दिमाग में उत्पन्न सत्य की स्पष्टता के साथ जोड़ देते हैं। अचानक मेरे मन में प्रेरित पौलुस के बारे में एक विचार आता है जब उसके कुछ यहूदी साथियों ने मसीह को ठुकरा दिया था, ये वही थे जो यहूदी विश्वास के लक्ष्यों को पूरा करने में बहुत जोश रखते थे, और प्रेरित यह कहता है, "क्योंकि मैं उनकी गवाही देता हूँ कि उनको परमेश्वर के लिये धुन रहती है, परंतु बुद्धिमानी के साथ नहीं।" दूसरे शब्दों में, उत्साह सराहनीय था, परंतु यह भटका हुआ था क्योंकि यह सत्य की स्पष्ट समझ के साथ भरा, जुड़ा और प्रेरित नहीं था। यह लगभग ऐसे है मानो हमारा उत्साह कार की टंकी में भरा हुआ इंधन हो, और धर्मशिक्षाएँ स्टीयरिंग व्हील हों। यदि आप सही दिशा की ओर नहीं जा रहे हैं, तो गति बढ़ानेवाला पैडल वास्तव में एक खतरनाक उपरकण बन जाता है। और इसलिए हमारे पास सत्य के अनुसार प्रवाहित होनेवाला उत्साह होना चाहिए, और तब यह भलाई के लिए एक बहुत ही शक्तिशाली बल बन जाता है।
>
> — डॉ. ग्लेन स्कोर्गी

सरदीस इसके बाद, प्रकाशितवाक्य 3:1-6 में सरदीस की कलीसिया को लिखा पत्र आता है। यहाँ यूहन्ना आत्मा के सात प्रकटीकरणों और यीशु के हाथ के सात तारों की ओर संकेत करके सरदीस की कलीसिया को स्मरण दिलाता है कि यीशु के पास संपूर्ण सामर्थ्य और अधिकार है। यूहन्ना ने यीशु के अधिकार के प्रति ध्यान आकर्षित किया क्योंकि इस कलीसिया के प्रति उसका मूल्याँकन बहुत गंभीर था।

जैसा कि हम प्रकाशितवाक्य 3:1-3 में पढ़ते हैं :

> तू जीवित तो कहलाता है, पर है मरा हुआ। जागृत हो, और उन वस्तुओं को जो बाकी रह गई हैं और जो मिटने को हैं, उन्हें दृढ़ कर; क्योंकि मैं ने तेरे किसी काम को अपने परमेश्वर के निकट पूरा नहीं पाया. . . यदि तू जागृत न रहेगा तो मैं चोर के समान आ जाऊँगा (प्रकाशितवाक्य 3:1-3)।

सरदीस नगर एक शक्तिशाली गढ़ के रूप में प्रसिद्ध था, परंतु दो अवसरों पर बड़े अचंभे से इस पर कब्जा कर लिया गया था। और यीशु ने चेतावनी दी कि यदि वे पश्चाताप करने में विफल रहते हैं तो वह सरदीस की कलीसिया के साथ भी कुछ वैसा ही करेगा। वह अचानक उन पर आक्रमण करते हुए चोर की नाई आएगा। परंतु जो उसके प्रति विश्वासयोग्य रहेंगे, उनके लिए मसीह ने पवित्रता, सहायता और प्रतिफल की प्रतिज्ञा की।

फिलदिलफिया फिलदिलफिया की कलीसिया को लिखा गया यीशु का पत्र प्रकाशितवाक्य 3:7-13 में पाया जाता है। इस पत्र में, यूहन्ना ने यीशु का परिचय ऐसे व्यक्ति के रूप में दिया जिसके पास दाऊद की कुंजी है, अर्थात् यीशु दाऊद के राज्य के दरवाजे को खोल सकता है और जिन्हें चाहे उसमें प्रवेश करा सकता है, और अन्यों को बाहर करके दरवाजों को बंद कर सकता है। इस कलीसिया के लिए यीशु के वचन सकारात्मक थे, परंतु उनमें भी एक अस्पष्ट चेतावनी थी।

प्रकाशितवाक्य 3:8 में उसने उन्हें यह आश्वासन दिया :

> मैं ने तेरे सामने एक द्वार खोल रखा है, जिसे कोई बन्द नहीं कर सकता; तेरी सामर्थ्य थोड़ी सी तो है, फिर भी तू ने मेरे वचन का पालन किया है और मेरे नाम का इन्कार नहीं किया (प्रकाशितवाक्य 3:8)।

मसीह ने इस कलीसिया के सामने एक द्वार खोल रखा था, अर्थात् उनके पास बिना किसी रुकावट के एक अवसर था कि वे आत्मिक तौर पर बढ़ें और विकसित हों। यदि वे इस खुले द्वार का लाभ उठाते हैं, तो मसीह उनके शत्रुओं के घुटने टिकवा देगा, और फिलदिलफिया के विश्वासी नए यरूशलेम के वारिस होंगे। और परमेश्वर का नाम उन पर लिखा होगा, अर्थात् वे हमेशा के लिए उसके रहेंगे। पर यहाँ अर्थ यह भी है कि यदि वे इस अवसर का लाभ नहीं उठाते हैं, तो वे इन आशीषों को प्राप्त नहीं करेंगे।

लौदीकिया इसके बाद, हम प्रकाशितवाक्य 3:14-22 में लौदीकिया की कलीसिया के लिए यीशु के पत्र को पाते हैं। इस पत्र में यूहन्ना यीशु का विवरण ऐसे व्यक्ति के रूप में करता है जिसके शब्द संपूर्ण 'आमीन' हैं, अर्थात् यीशु परम विश्वासयोग्य अधिकारपूर्ण है। यूहन्ना यीशु का विवरण विश्वासयोग्य और सच्चे गवाह, और परमेश्वर की सृष्टि के शासक के रूप में भी करता है। इस विवरण की रचना इसलिए की गई थी कि लौदीकिया के विश्वासी ध्यान दें, क्योंकि उनका मूल्याँकन बहुत ही नकारात्मक होगा।

सुनिए प्रकाशितवाक्य 3:15-16 में यीशु ने क्या कहा :

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> मैं तेरे कामों को जानता हूँ कि तू न तो ठंडा है और न गर्म : भला होता कि तू ठंडा या गर्म होता। इसलिये कि तू गुनगुना है, और न ठंडा है और न गर्म, मैं तुझे अपने मुँह में से उगलने पर हूँ। (प्रकाशितवाक्य 3:15-16)

लौदीकिया, कुलुस्से और हियरापुलिस के बीच में स्थित एक धनवान शहर था। कुलुस्से और हियरापुलिस दोनों विशेष जल आपूर्ति रखने के लिए जाने जाते थे। कुलुस्से में पहाड़ों से ठंडे जल के झरने आते थे; हियरापुलिस में गर्म जल के झरने थे। माना जाता था कि इन दोनों तरह के जल में चंगाई की सामर्थ्य थी। परंतु लौदीकिया का पानी गुनगुना था, जिसमें चंगाई की कोई सामर्थ्य नहीं थी। यीशु ने आत्मिक सत्य को प्रकट करने के लिए इन भौतिक वास्तविकताओं का प्रयोग किया : लौदीकिया की कलीसिया धनवान थी, परंतु उनकी धन-संपत्ति ने उनकी आत्मिक सामर्थ्य को छीन लिया था। इस कलीसिया को पश्चाताप करने की आवश्यकता थी, अन्यथा यीशु उन्हें ठुकरा देगा।

> मैं सोचता हूँ कि प्रकाशितवाक्य 2 और 3 प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के पत्रों के लिए बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि वे कई रूपों में कलीसिया के लिए प्रयोग की महत्वपूर्ण बातों, अर्थात् उन विशेषताओं को प्रदान करते हैं जिन्हें प्रकट करने के लिए कलीसियाओं को आज्ञा दी गई है। और एक विशेष बात कलीसिया को दिए गए प्रत्येक संदेश के अंत में पाई जाती है, जो कि जय पाने की है — यह है, "जो कलीसिया जय पाए।" "वह जो जय पाए।" और यह हमें दृढ़ बने रहने की आवश्यकता का स्मरण दिलाता है। परंतु साथ ही अन्य व्यापक विषय भी इसमें पाये जाते हैं, इसलिए जब आप इन दो अध्यायों को पढ़ते हैंतो जिस शब्द को आप बार-बार पाएँगे, वह है पश्चाताप, उन कलीसियाओं के लिए जो प्रभु की बुलाहट को पूरा करने में असफल रही है, उन्हें पश्चाताप करने की आवश्यकता है। चाहे उन्होंने अपने पहले प्रेम को खो दिया हो, चाहे वे विधर्मी समूहों की शिक्षाओं का, या फिर कलीसिया के भीतर ही झूठी शिक्षा के समूहों का अनुसरण कर रही हों, उन्हें उससे पश्चाताप करने की बुलाहट दी गई है। और इस प्रकार परमेश्वर उन्हें उस समय अपने पास वापस बुला रहा है। परंतु जो उससे प्रेम करते हैं वह उन्हें यह बुलाहट दे रहा है कि वे ऐसा निरंतर करते रहे, और जो दृढ़ हैं वे निरंतर दृढ़ बने रहें, और विश्वास में सच्चे बने रहें, परंतु विशेष रूप से प्रभु की आराधना में सच्चे बने रहें।
>
> — डॉ. डेविड डब्ल्यू. चैपमैन

अब जबकि हमने मसीह के दर्शन का अध्ययन कर लिया है, इसलिए आइए, आने वाली घटनाओं के विषय में यूहन्ना के दर्शन की ओर मुड़ें, जिसका वर्णन प्रकाशितवाक्य 4:1-16:21 में किया गया है।

आने वाली घटनाएँ

प्रकाशितवाक्य 4:1-2 के अनुसार यह दर्शन स्वर्गीय सिंहासन के सामने घटित होता हैं और उन आने वाली घटनाओं को प्रकट करता है जो यूहन्ना के समय में भविष्य की बातें थीं। यह एक साथ सारी कलीसियाओं को संबोधित करता है, और मुख्यतः भलाई और बुराई की शक्तियों के बीच के बड़े संघर्ष के रूप में भविष्य पर ध्यान देता है। इस दर्शन की रचना इसलिए की गई थी कि यूहन्ना के मूल श्रोता शैतान और पाप के विरूद्ध अपने संघर्ष में विश्वासयोग्य बने रहने को उत्साहित हों, क्योंकि परमेश्वर की भावी विजय निश्चित है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

आने वाली घटनाओं के यूहन्ना के दर्शन के बारे में जिस पहली बात पर हमें ध्यान देना चाहिए, वह यह है कि इसमें छोटे-छोटे दर्शनों की चार श्रृंखलाएँ हैं : सात मुहरें, सात तुरहियाँ और सात इतिहास और सात कटोरे। कुछ व्याख्याकार मानते हैं कि इस श्रृंखला को समय के क्रम के अनुसार पढ़ा जाना चाहिए, जैसे कि वे इतिहास की क्रमिक अवस्थाओं को प्रकट करती हों। परंतु यूहन्ना ने कभी नहीं दर्शाया कि वास्तव में ऐसा था।

एक बात यह है कि वे अस्थाई चिह्न जो इन श्रृंखलाओं को एक साथ जोड़ते हैं — "इसके बाद" जैसे वाक्यांश — उस क्रम को दर्शाते हैं जिसमें उसे ये दर्शन दिखाए गए थे, न कि घटनाओं के उस क्रम को जो इन दर्शनों में पाया जाता है।

दूसरी बात, इन दर्शनों में कुछ विशेष ऐतिहासिक घटनाओं का पाया जाना प्रतीत होता है जिनका उल्लेख एक से अधिक श्रृंखलाओं में किया गया है। इसी कारण, हमारा अध्याय एक ऐसे व्याख्यात्मक दृष्टिकोण का प्रयोग करेगा जिसे कभी-कभी "पुनरावृत्ति" कहा जाता है।

सामान्य तौर पर कहें तो, पुनरावृत्ति तब होती है जब कोई बाद का अनुच्छेद पहले के किसी अनुच्छेद को दोहराता है। जब इसे प्रकाशितवाक्य की पुस्तक पर लागू किया जाता है, तो यह शब्द विशेष रूप से उस विचार को दर्शाता है कि दर्शनों की प्रत्येक श्रृंखला मसीह के पहले और दूसरे आगमन के बीच के संपूर्ण समय का वर्णन करती है, परंतु अपने भिन्न विवरणों और महत्वों के साथ।

बाइबल-आधारित भविष्यवाणी में पुनरावृत्ति वास्तव में बहुत सामान्य बात है। पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं ने विभिन्न अनुच्छेदों में घटनाओं की समान श्रृंखलाओं का प्रयोग करने के लिए इस तकनीक का बार-बार प्रयोग किया है। कई बार पुनरावृत्ति में बहुत ही समान रूपक का प्रयोग किया गया है, जैसे कि यिर्मयाह 30 और 31 में, जहाँ यिर्मयाह ने इस्राएल की पुनर्स्थापना की भविष्यवाणी की थी। अन्य समयों में, पुनरावृत्ति में समान घटनाओं का वर्णन करने के लिए भिन्न रूपकों का प्रयोग भी किया गया है, जैसे कि यशायाह 9 और 11 में, जहाँ यशायाह ने मसीहा के आगमन के बारे में बात की थी।

हम इसी बात को उन मुकदमों में भी देखते हैं जो परमेश्वर होशे 9-14 में इस्राएल के विरुद्ध लेकर आया। और इसके कई और उदाहरण भी हैं। अत: जब यूहन्ना ने इस तकनीक का प्रयोग प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में किया, तो वह अपने संदेश को प्रेषित करने के लिए जानी-पहचानी, पारंपरिक, बाइबल-आधारित रणनीति का प्रयोग कर रहा था।

इन दर्शनों में बहुत से ऐसे प्रमाण हैं जो बड़ी मजबूती से सुझाव देते हैं कि यूहन्ना घटनाओं के एक जैसे क्रम का ही वर्णन विभिन्न दृष्टिकोण से कर रहा था। उदाहरण के तौर पर, यूहन्ना के दर्शन तीन भिन्न-भिन्न समयों पर उसे दर्शाते हैं जिसे हम अंतिम न्याय के रूप में संबोधित करेंगे।

प्रकाशितवाक्य 6:12-17 में, जो सात मुहरों के दर्शन का भाग है, सूर्य काला हो जाता है, चंद्रमा लहू के समान हो जाता है, तारे पृथ्वी पर गिर पड़ते हैं, और पृथ्वी के सब लोग परमेश्वर के क्रोध से छिप जाते हैं। प्रकाशितवाक्य 11:15 में, जो सात तुरहियों के दर्शन का भाग है, एक ऊँची आवाज यह घोषणा करती है, "जगत का राज्य हमारे प्रभु का, और उसके मसीह का हो गया। और वह युगानुयुग राज्य करेगा!" प्रकाशितवाक्य 15:1 में, जो सात कटोरों के दर्शन का भाग है, हमें बताया गया है कि जब सात कटोरों को उंडेला जाएगा तो परमेश्वर के क्रोध का अंत हो जाएगा।

इनमें से प्रत्येक अनुच्छेद उन घटनाओं का वर्णन करता है जो मसीह के पुनरागमन और पृथ्वी पर परमेश्वर के अंतिम दंड से संबंधित हैं। परंतु दर्शनों की प्रत्येक श्रृंखला में अन्य विवरण भी हैं जो अंतिम दंड से पहले आते प्रतीत होते हैं। इसी कारण, दर्शनों की प्रत्येक श्रृंखला को मसीह के पुनरागमन से पहले परमेश्वर के राज्य के पूरे इतिहास के भिन्न विवरण के रूप में पढ़ना सर्वोत्तम प्रतीत होता है।

यद्यपि सुसमाचारिक लोगों के बीच पुनरावृत्ति एक प्रचलित दृष्टिकोण है, फिर भी यह मान लेना महत्वपूर्ण है कि कुछ लोग प्रकाशितवाक्य की पुस्तक की व्याख्या इस रीति से नहीं करते हैं। इसलिए

इस अध्याय में, हम अपनी व्याख्याओं को पुनरावृत्ति के दृष्टिकोण के साथ बहुत अधिक निकटता के साथ नहीं जोड़ेंगे। फिर भी, हमें यह मान लेना चाहिए कि अधिकांश मसीही शिक्षक मानते हैं कि यह आने वाली घटनाओं के यूहन्ना के दर्शनों की साहित्यिक संरचना का, और साथ ही इन दर्शनों की विषय-वस्तु का सर्वोत्तम अर्थ प्रदान करता है।

जैसा कि हम देख चुके हैं, आने वाली घटनाओं का यूहन्ना का दर्शन चार मुख्य भागों में विभाजित होता है: सात मुहरें, सात तुरहियाँ, सात प्रतीकात्मक इतिहास, और सात कटोरे। हम प्रकाशितवाक्य 4:1-8:1 में वर्णित सात मुहरों की श्रृंखला के साथ आरंभ करके दर्शनों की प्रत्येक श्रृंखला का अध्ययन करेंगे।

सात मुहरें

सात मुहरों के दर्शन में दो मुख्य भाग हैं, जिसका आरंभ प्रकाशितवाक्य 4 और 5 में परमेश्वर के स्वर्गीय सिंहासन कक्ष के विवरण से होता है। यह भाग हमें सात मुहरों के साथ एक महत्वपूर्ण चर्मपत्र दिखाता है, और अध्याय 6-8 में इन मुहरों के खोले जाने के मंच को तैयार करता है।

प्रकाशितवाक्य 4:1-11 परमेश्वर के स्वर्गीय सिंहासन कक्ष के एक दृश्य का वर्णन करता है, और यह यहेजकेल 1, यशायाह 6 और पुराने नियम के अन्य सदृश्य दर्शनों के समान है। परमेश्वर सिंहासन पर विराजमान था, और स्वर्गीय प्राणी उसकी आराधना कर रहे थे — उनमें वे चार भी थे जिनका वर्णन यूहन्ना ने कुछ विवरण के साथ किया था। चारों में से प्रत्येक के शरीर पर आँखें ही आँखें थीं और उनके छ: पँख थे। परंतु उनकी दिखावट अलग-अलग थी : एक सिंह के समान, दूसरा बछड़े के समान, तीसरा एक मनुष्य जैसा, और चौथा उकाब के समान था। वे शायद परमेश्वर को स्तुति देते हुए पृथ्वी के सारे प्राणियों का प्रतिनिधित्व कर रहे थे।

यूहन्ना के दर्शन ने सिंहासन के चारों ओर खड़े चौबीस प्राचीनों को भी दिखाया, जो शायद पुराने नियम के इस्राएल के बारह गोत्रों, और नए नियम के बारह प्रेरितों की संख्या के अनुसार हों। ये प्राचीन पूरे इतिहास में परमेश्वर के लोगों के प्रतीक थे। जब ये चारों प्राणी परमेश्वर की स्तुति करते, तब उसके प्रताप और अधिकार को स्वीकार करते हुए प्राचीन उसके सामने गिर पड़ते थे, और उसके प्रति समर्पण, आज्ञाकारिता और आदर की प्रतिज्ञा करते थे। प्राचीनों से आगे असंख्य स्वर्गदूत थे जो परमेश्वर की स्तुति कर रहे थे, और परमेश्वर के मेम्ने की भी स्तुति कर रहे थे।

इस दृश्य में भी मिलाप वाले तम्बू और मंदिर के पुराने नियम के विवरणों के कई रूपक पाए जाते हैं : सिंहासन के सामने दीपक जल रहे थे; सुगंधित धूप ने परमेश्वर के लोगों की प्रार्थनाओं को दर्शाया; वहाँ काँच का सा समुद्र था, जो कि पुराने नियम के पीतल के समुद्र से श्रेष्ठ था; और वहाँ लेवीय गायकों द्वारा चढ़ाई जानेवाली स्तुति के समान स्तुति के गीत थे। इन प्रतीकों ने दर्शाया कि यूहन्ना को परमेश्वर के स्वर्गीय सिंहासन कक्ष का दर्शन दिया गया था, जहाँ से वह सारे ब्रह्मांड पर शासन करता है और अपने निर्णय सुनाता है। और इसने यूहन्ना के पाठकों को यह बताया कि इस दर्शन में महत्वपूर्ण विषयों को दर्शाया गया है।

स्वर्गीय दर्शन प्रकाशितवाक्य 5:1-14 में जारी रहा। परमेश्वर के दाहिने हाथ में एक पुस्तक थी, जो संसार के लक्ष्य के लिए उसकी योजना को दर्शाती है। परंतु उसके कक्ष का कोई भी सदस्य उस पुस्तक को नहीं खोल सका। दूसरे शब्दों में, उनमें से कोई भी उसकी योजना को पूरा नहीं कर सका। तब एक प्राचीन ने यूहन्ना से कहा कि यहूदा के गोत्र का सिंह इन सातों मुहरों को खोल देगा और इस पुस्तक को पढ़ेगा।

यहूदा के गोत्र के सिंह का उल्लेख उत्पत्ति 49:9-10 से लिया गया है, जहाँ हम इन शब्दों को पढ़ते हैं :

> यहूदा सिंह का बच्चा है . . . जब तक शीलो न आए तब तक न तो यहूदा से राजदण्ड छूटेगा, न उसके वंश से व्यवस्था देनेवाला अलग होगा; और राज्य राज्य के लोग उसके अधीन हो जाएँगे (उत्पत्ति 49:9-10)।

इस भविष्यवाणी ने दर्शाया कि यहूदा इस्राएल के गोत्रों पर राज्य करेगा, और अंततः एक राजा को उत्पन्न करेगा जो सारे संसार पर राज्य करेगा।

परंतु जब यूहन्ना ने देखा, तो वह यह देखकर हैरान रह गया कि यहूदा का सिंह वास्तव में एक मेम्ना था, जो मानो वध किए हुए मेम्ने जैसा दिखाई दे रहा था। निस्संदेह वह मेम्ना मसीह था। वह यहूदा के वंशज, अर्थात् इस्राएल का राजा है। और वही फसह का मेम्ना बन गया जिसने प्रायश्चित के बलिदान के रूप में अपने आपको दे दिया, जैसा कि हम यूहन्ना 1:29 में पढ़ते हैं। पुस्तक को खोलने की यीशु की योग्यता ने दर्शाया कि यह वही है जिसके द्वारा परमेश्वर इस संसार के लिए अपनी सारी योजनाओं को पूरा करेगा।

> जब आप प्रकाशितवाक्य 5 को देखते हैं, तो वहाँ सिंह और मेम्ने के रूप में यीशु का एक महान रूपक प्रस्तुत किया गया है। अब यह रूपक कहाँ से आता है? इसके विषय में सबसे पहले हमें उस रूपक की भविष्यवाणिय पृष्ठभूमि पर ध्यान देना चाहिए, अर्थात् यह कि यह एक भविष्यवाणिय रूपक है जो यूहन्ना हमें यीशु के बारे में दे रहा है। और जब हम पुराने नियम की पृष्ठभूमि को देखते हैं, तो हम पाते हैं कि वे बहुत ही गहन विषय हैं। उदाहरण के तौर पर, सिंह उत्पत्ति 49 से यहूदा के गोत्र से संबंधित होना चाहिए, जहाँ यह भविष्यवाणी की गई है कि यहूदा सिंह का बच्चा होगा और कि राजदंड कभी यहूदा से दूर न होगा, और कि वह अपने सारे भाइयों पर राज्य करेगा। और यह सिंह का प्रतीक जयवंत प्रतीक है, यह बहुत ही शक्तिशाली प्रतीक है। मेम्ना कहाँ से आता है? हम पुराने नियम के फसह के मेम्ने की ओर देख सकते हैं जो लोगों के लिए और पापों की क्षमा के लिए वध किया गया है। और हम इसे यशायाह 53 के दुःख उठानेवाले सेवक के साथ भी जोड़ सकते हैं, अर्थात् वह जिसे छेदा गया और वध किए जाने के लिए मेम्ने के रूप में ले जाया गया। और इसलिए यूहन्ना ने हमें यह दिखाने के लिए कि यीशु कौन है, इन दो रूपकों को लिया और हमारे लिए बहु-दृष्टिकोणीय रूपक की रचना की। वह सिंह है और मेम्ना है। वह वध किया हुआ मेम्ना है, हाँ, परंतु वह वध किया हुआ मेम्ना वही है जो जय पाता है, वही है जो जयवंत है। और हम यह बात प्रकाशितवाक्य 5 में देखते हैं जहाँ उसके सात सींग हैं। अतः मेम्ने का रूपक कमजोर, नाश किया हुआ, फिर कभी न उठनेवाले मेम्ने के रूप में नहीं है, बल्कि यह जय पानेवाले मेम्ने का है, ऐसा मेम्ना जो यहूदा का सिंह है, और यहूदी धर्म में इन विचारों का संबंध मसीहा-संबंधी आशाओं से था। और यूहन्ना हमें दिखा रहा है कि कैसे ये रूपक, इन रूपकों की वास्तविकताएँ, यीशु में पूरी होती हैं।
>
> — डॉ. ब्रेंडन क्रो

> उत्पत्ति 49 यहूदा के गोत्र के सिंह के बारे में बात करता है, और यह यहूदी अपेक्षा, चौथे एज्रा और अन्य स्थानों में विकसित हुआ, जिसमें जय पानेवाले, और युद्ध करनेवाले सिंह का उल्लेख है। और इसलिए यूहन्ना यहूदा के गोत्र के इस सिंह के बारे में सुनता है जिसने जय पाई है। परंतु जब वह मुड़ता है, तो वह एक शक्तिशाली, विजयी सिंह के विपरीत कुछ देखता है। वह एक मेम्ने को देखता है,

> और न केवल मेम्ने को जिसे सबसे कमजोर प्राणी माना जाता है, बल्कि एक वध किए हुए मेम्ने को देखता है। और यह हमें वापस सुसमाचार के उस केंद्र में लेकर आता है, जिसे हम पूरे नए नियम में पाते हैं, और वह यह है कि यीशु जय पाता है, विशेषकर वह ऐसा पारंपरिक अर्थ में शक्ति को प्रकट करके नहीं करता। यीशु क्रूस के द्वारा, अर्थात् मरने के द्वारा विजय प्राप्त करता है। परमेश्वर की सामर्थ्य निर्बलता में सिद्ध होती है। परमेश्वर की महिमा प्रकट होती है। यीशु के दु:खों में उसकी विजय प्रकट होती है।
>
> — डॉ. क्रेग एस. कीनर

सात मुहरों के दर्शन का दूसरा हिस्सा प्रकाशितवाक्य 6:1-8:1 में है जो कि मुहरों के खुलने से संबंधित है। यह छः मुहरों के खुलने को दर्शाता है, जिसके बाद में एक अंतराल आता है, और फिर सातवीं मुहर खुलती है।

पहली चार मुहरों ने प्रकाशन के चार जाने-पहचाने घुड़सवारों को भेजा जो संसार पर विपत्तियाँ लेकर आए। चार घुड़सवारों के रूपक को जकर्याह 6 से लिया गया है, जहाँ एक ही जैसे रंग के घोड़ों के विषय में कहा गया है कि वे स्वर्ग की सात आत्माएँ हैं। जब पहली मुहर को खोला गया, तो श्वेत घोड़े का सवार जातियों के लिए जय लेकर आया। दूसरी मुहर लाल रंग के घोड़े के सवार को लेकर आई, जिसने नरसंहार को प्रस्तुत किया।

नरसंहार का सबसे स्पष्ट स्वरूप युद्ध है, परंतु यह तस्वीर इतनी व्यापक है कि इसमें मनुष्यों की हत्या के अन्य स्वरूप भी शामिल होते हैं। तीसरी मुहर ने एक काले घोड़े के सवार को भेजा जिसने अकाल को प्रस्तुत किया। और चौथी मुहर मृत्यु नाम के सवार को लेकर आई, जो पीले से घोड़े पर सवार था और उसने तलवार, अकाल, मरी और वन पशुओं के द्वारा मृत्यु को प्रस्तुत किया। ये विपत्तियाँ जितनी भी भयानक रही हों, परंतु उनसे पृथ्वी का एक चौथाई हिस्सा ही प्रभावित हुआ। परमेश्वर के दंड के इस भाग से अधिकांश लोग बच गए।

जब पाँचवीं मुहर खोली गई, तो यूहन्ना ने स्वर्ग में मसीही शहीदों का दर्शन देखा। इन पवित्र लोगों का वध इसलिए कर दिया गया था क्योंकि ये परमेश्वर और उसके वचन के प्रति विश्वासयोग्य रहे थे। उन्होंने परमेश्वर की दोहाई दी कि वह उनके हत्यारों को दंड दे, परंतु उनसे कहा गया कि परमेश्वर अपना संपूर्ण दंड अभी उन पर नहीं डालेगा। उन्हें तब तक धीरज धरना था, जब तक शहीद होनेवालों की संख्या पूरी नहीं हो जाती।

जब छठवीं मुहर को खोला गया, तो पूरी पृथ्वी ने परमेश्वर के दंड का अनुभव किया। वहाँ भूकंप हुआ; और सूर्य काला और चंद्रमा लहू के समान लाल हो गया; तारे अकाश से नीचे गिर गए; आकाश सरक गया; और हरेक पहाड़ और टापू अपने-अपने स्थान से टल गए। यह विवरण राजनैतिक उथल-पुथल के विषय में पुराने नियम की भविष्यवाणियों का स्मरण दिलाता है, जिनमें कुछ हम यशायाह 34:1-4 और योएल 2:10-11 में पाते हैं। यह इस बात को कहने का तरीका था कि परमेश्वर अंतिम न्याय को ला रहा था जो वर्तमान बुरे संसार को नाश कर देगा।

> एक दिन मनुष्यों को जवाबदेह ठहराया जाएगा और परमेश्वर के सामने उनका कोई बहाना नहीं चलेगा। जो लोग परमेश्वर से डरते हैं वे और भी अधिक उसका सम्मान करेंगे। परंतु जो लोग इन बातों को केवल मजाक समझते हैं, वे भविष्य के न्याय का सामना करेंगे। उनके पास प्रार्थना करने का भी अवसर नहीं होगा। उनकी आशा केवल यही होगी कि पहाड़ और पर्वत उन पर आ गिरें ताकि वे परमेश्वर के आने वाले क्रोध से बच सकें। न्याय की यह चेतावनी वह है जिसे

> परमेश्वर ने विशेषकर चुने हुए लोगों के लिए तैयार की है, ताकि वे परमेश्वर के भय में भक्तिमय जीवन जीएँ, और पवित्र रूप में ऐसा जीवन जीने हेतु सामर्थ्य के लिए प्रार्थना करें जो उसे प्रसन्न करता हो।
>
> रेव्ह. डॉ. स्टीफन टोंग, अनुवाद

यह अंतराल कलीसिया का वर्णन ऐसे रूपों में करता जो अपने लोगों के लिए परमेश्वर की सुरक्षा को दर्शाता है। पहला, यूहन्ना ने यह घोषणा सुनी कि इस्राएल के बारह गोत्रों में से प्रत्येक गोत्र के 12,000 लोगों, अर्थात् कुल मिलाकर 1,44,000 लोगों पर परमेश्वर ने अपने विशेष लोग होने की मुहर लगाई थी। यद्यपि इन 1,44,000 को विभिन्न रूपों में समझा गया है, परंतु प्रकाशितवाक्य का लेख कहता है कि यूहन्ना ने 1,44,000 के बारे में एक घोषणा सुनी, परंतु जब उसने मुड़कर देखा, तो उसने कुछ अलग ही पाया।

सुनिए प्रकाशितवाक्य 7:9 में यूहन्ना ने उनका वर्णन किस प्रकार किया :

> हर एक जाति और कुल और लोग और भाषा में से एक ऐसी बड़ी भीड़, जिसे कोई गिन नहीं सकता था, श्वेत वस्त्र पहिने और अपने हाथों में खजूर की डालियाँ लिये हुए सिंहासन के सामने और मेम्ने के सामने खड़ी है (प्रकाशितवाक्य 7:9)।

आपको याद होगा कि प्रकाशितवाक्य 5 में भी कुछ ऐसा ही हुआ था। यूहन्ना ने सिंह के बारे में एक घोषणा सुनी थी, और जब उसने देखा तो वहाँ एक मेम्ना था। वहाँ कुछ ऐसा ही हुआ। उसने 1,44,000 यहूदियों के बारे में घोषणा सुनी, और जब उसने देखा तो यहूदियों और अन्यजातियों की एक और बड़ी भीड़ को पाया। दोनों विषयों में, यूहन्ना ने पुराने नियम के प्रतीकों से लिए गए शब्दों को सुना — सिंह और इस्राएल के गोत्र। परंतु जब वह देखने के लिए मुड़ा, तो जो उसे दिखाई दिया वह उससे बहुत बड़ा था जिसकी घोषणा हुई थी। सिंह का प्रतीक मसीह में पूरा हुआ, और गोत्रों का प्रतीक प्रत्येक जाति से आए विश्वासियों की एक बड़ी भीड़ में पूरा हुआ।

अंतराल के बाद, सातवीं मुहर के खुलने का वर्णन प्रकाशितवाक्य 8:1 में किया गया है। परंतु एक महान और बड़े अंत की अपेक्षा वहाँ पर केवल सन्नाटा था। सृष्टि पवित्र भय से भरी हुई थी। सन्नाटे ने उन लोगों में नाटकीय तनाव को उत्पन्न कर दिया जिन्होंने यूहन्ना के दर्शनों को पहले पढ़ा था। इतिहास की यह भेदपूर्ण अंतिम अवस्था क्या थी? इस प्रश्न का उत्तर आने वाले दर्शनों में देखा जाना बाकी था।

अब जबकि हमने सात मुहरों के बारे में अध्ययन कर लिया है, इसलिए आइए हम अपना ध्यान आने वाली घटनाओं के दर्शनों की दूसरी श्रृंखला पर लगाएँ : प्रकाशितवाक्य 8:2-11:19 की सात तुरहियाँ।

सात तुरहियाँ

सात तुरहियों के दर्शन में हम स्वर्गदूतों द्वारा तुरहियाँ बजाने की एक श्रृंखला को पाते हैं। प्रत्येक बार जब कोई तुरही बजाई जाती है, तो पृथ्वी पर कोई दंड आ पड़ता है। यह देखना महत्वपूर्ण है कि सात तुरहियों के दर्शन की संरचना सात मुहरों के दर्शन के सदृश है। दर्शन छः तुरहियों को प्रस्तुत करता है, जिनके बाद एक अंतराल आता है, और फिर सातवीं तुरही बजती है। ये तुरहियाँ होशे 5:8; योएल 2:1 और आमोस 2:2 और जकर्याह 9:14 जैसे पुराने नियम के भविष्यवाणिय अनुच्छेदों की तुरहियों का स्मरण कराती हैं। ये ऐसी तुरहियाँ हैं जो तब बजती हैं जब परमेश्वर स्वर्गदूतों की अपनी सेनाओं के साथ आता है, और स्वर्गीय सेना को परमेश्वर के शत्रुओं के विरुद्ध युद्ध करने को कहता है।

प्रकाशितवाक्य 8:2-13 में बजाई गईं चार तुरहियों ने स्वर्गदूतों की सेनाओं के माध्यम से सृष्टि के चार मुख्य क्षेत्रों में दंड को भेजा। जब पहली तुरही फूँकी गई, तो लहू से मिले हुए ओले और आग पृथ्वी

पर डाली गई। जब दूसरी तुरही फूँकी गई तो एक बड़े पहाड़ जैसा कुछ समुद्र में डाल दिया गया। जब तीसरी तुरही फूँकी गई तो एक जलता हुआ तारा साफ़ पानी के सोतों में फेंक दिया गया, जिससे सारा पानी कड़वा हो गया और पीने योग्य न रहा। और चौथी तुरही के फूँके जाने के साथ ही, आकाश को नुकसान पहुँचा; एक तिहाई दिन और एक तिहाई रात का प्रकाश जाता रहा। परंतु ये दंड चाहे जितने भी बड़े थे, फिर भी प्रत्येक क्षेत्र का केवल एक तिहाई हिस्सा ही नाश हुआ था। यद्यपि इस भाग के अंत में एक उकाब ने चेतावनी दी कि इससे भी बड़े दंड आने वाले थे।

पाँचवीं तुरही के फूँके जाने का वर्णन प्रकाशितवाक्य 9:1-12 में किया गया है। इसने अप्राकृतिक टिड्डियों को भेजा। यूहन्ना ने इन टिड्डियों का वर्णन ऐसे किया जैसे कि वे युद्ध के लिए तैयार किए गए घोड़ों जैसे हों, उनके सिर पर सोने के मुकुट हों, उनके चेहरे मनुष्यों जैसे हों, बाल स्त्रियों जैसे हों, दाँत सिंहों जैसे हों, और पूँछें बिच्छुओं जैसी हों। परंतु उनकी सामर्थ्य सीमित थी। उन्हें पृथ्वी पर केवल पाँच महीने तक दुःख पहुँचाने का अधिकार दिया गया था, और उन्हें केवल दुष्टों पर हमला करने का अधिकार दिया गया था।

छठवीं तुरही का फूँका जाना प्रकाशितवाक्य 9:13-21 में पाया जाता है। इसने फुरात नदी के चार स्वर्गदूतों को खोल दिया, जो मनुष्यों की एक तिहाई को नाश करने के लिए आगे बढ़े।

इन छः तुरहियों के बाद प्रकाशितवाक्य 10:1-11:14 में द्वि-भागी अंतराल आता है। ऐसे दृश्य में, जो यहेजकेल 2:9-3:9 में दंड के विषय में यहेजकेल को दिए गए परमेश्वर के प्रकाशन से मिलता-जुलता है, यूहन्ना ने भविष्यवाणी के संदेशों से भरी एक छोटी पुस्तक को प्राप्त किया, और उसे उस पुस्तक को खाने के लिए कहा गया। इस पुस्तक का स्वाद मधु जैसा था, जो शायद उस शुभ-संदेश को प्रस्तुत करता है कि इस संसार के लिए परमेश्वर की योजनाएँ बिना किसी देरी के पूरी होंगी। परंतु उस पुस्तक ने उसके पेट को कड़वा भी कर दिया, जो शायद यह दर्शाता है कि परमेश्वर की योजनाओं के पूरे होने में दुखों का सामना भी करना होगा।

अंतराल का दूसरा भाग उन दो गवाहों के विषय में यूहन्ना के दर्शन का वर्णन करता है जो सुसमाचार प्रचार के कारण शहीद हुए थे। उन्होंने आश्चर्यकर्म किए, लोगों को पश्चाताप करने के लिए बुलाया, और आने वाले न्याय की चेतावनी दी। परंतु परमेश्वर के शत्रुओं के द्वारा उन्हें मार डाला गया।

दो गवाहों के विषय में यूहन्ना के दर्शन ने इतिहास के सबसे आधारभूत संघर्ष को दर्शाया : अर्थात् यीशु मसीह और उसके शत्रुओं के बीच का संघर्ष। वे दो गवाह बहुत ही शक्तिशाली थे, परंतु उनके शत्रु बहुत हिंसक थे और उन्होंने गवाहों को मार डाला। यह तुलना इस वास्तविकता को दर्शाती है कि यीशु और उसके शत्रुओं के संघर्ष के बीच कोई बीच का रास्ता नहीं है। प्रत्येक मनुष्य या तो यीशु की ओर है या फिर यीशु के विरूद्ध है।

अंतराल के बाद, प्रकाशितवाक्य 11:15-19 में सातवें स्वर्गदूत ने दर्शन की इस श्रृंखला का अंत करते हुए सातवीं तुरही फूँकी।

प्रकाशितवाक्य 11:15 सातवीं तुरही के फूँके जाने के समय स्वर्ग में इस घोषणा को दर्शाता है :

> जगत का राज्य हमारे प्रभु का और उसके मसीह का हो गया, और वह युगानुयुग राज्य करेगा (प्रकाशितवाक्य 11:15)।

सातवीं तुरही उस आराधना का आरंभ करती है जो परमेश्वर के सिंहासन कक्ष में होगी, जब वह इस पृथ्वी के सारे राज्यों पर विजय प्राप्त कर लेगा और सारी सृष्टि पर अपना अंतिम न्यायपूर्ण निर्णय सुना देगा। मसीह पृथ्वी को नया बनाने के लिए वापस आएगा; उसकी महिमा पूर्णतः प्रकट हो जाएगी; और परमेश्वर का राज्य सारी सृष्टि में पूर्ण रूप से प्रकट हो जाएगा।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

आने वाली घटनाओं के संबंध में दर्शनों की तीसरी श्रृंखला प्रकाशितवाक्य 12:1-14:20 में पाए जाने वाले सात प्रतीकात्मक इतिहास हैं।

सात इतिहास

संरचनात्मक रूप से, सात प्रतीकात्मक इतिहासों का दर्शन मुहरों और तुरहियों के दर्शनों जैसा ही है : पहले छः इतिहासों को एक साथ रखा गया है, उनके बाद अंतराल आता है, और फिर सातवाँ प्रतीकात्मक इतिहास है। परंतु जहाँ मुहरों और तुरहियों के दर्शन ईश्वरीय दंड पर केंद्रित थे, वहीं सात इतिहासों ने शैतान और परमेश्वर के लोगों के बीच के आत्मिक संघर्ष को चित्रित किया। इस श्रृंखला के इतिहास मुख्य प्रतीकात्मक पात्रों के चारों तरफ घूमते हैं : स्त्री, अजगर, समुद्र से निकलता हुआ पशु, पृथ्वी से आता हुआ पशु, 1,44,000 विश्वासी, स्वर्गीय संदेशवाहक, और मनुष्य का पुत्र।

पहला प्रतीकात्मक पात्र सूर्य को ओढ़े हुए एक गर्भवती स्त्री है। उसका इतिहास प्रकाशितवाक्य 12:1-17 में पाया जाता है, और यह यीशु के जन्म और हरोदेस द्वारा उसे मार डालने के प्रयास के सदृश है। उस स्त्री ने, जो विश्वासयोग्य इस्राएल को दर्शाती है, मसीहा, यीशु मसीह को जन्म दिया। उसका बालक स्वर्ग में उठा लिया गया था, जो मसीह के पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण की ओर संकेत कर सकता है। परंतु वह स्त्री पृथ्वी पर ही रही और बड़े अजगर के द्वारा उसे सताया गया। परमेश्वर ने उसे बचाया जिससे अजगर उसे हरा न सका, परंतु फिर भी उस संघर्ष के कारण उसने दुःख उठाया। यह प्रतीकात्मक इतिहास इस सच्चाई को प्रस्तुत करता है कि यीशु परमेश्वर के विश्वासयोग्य लोगों के पास से अधोलोक में उतरा, और यह कि सच्चे विश्वासी शैतान और उसके राज्य के कारण निरंतर दुःख सहते हैं। यूहन्ना के मूल पाठक समझ गए होंगे कि यह संघर्ष ही उनकी समस्याओं की जड़ था, और उन्होंने परमेश्वर द्वारा स्त्री की सुरक्षा और देखभाल से उत्साह को प्राप्त किया होगा। साथ ही, वे दृढ़ बने रहने की अपनी जरूरत को भी समझ गए होंगे, क्योंकि संघर्ष शीघ्र समाप्त होने वाला नहीं था।

अगला प्रतीकात्मक इतिहास बड़े लाल रंग के अजगर के चारों तरफ घूमता है, और यह प्रकाशितवाक्य 12:3-17 में पाया जाता है। इस इतिहास को स्त्री के इतिहास के साथ-साथ प्रस्तुत किया गया है, परंतु प्रकाशितवाक्य 12:3 में इसे एक अलग चिह्न के रूप में पहचाना गया है। इस अजगर का वर्णन विशाल लाल अजगर के रूप में किया गया है, जिसके दस सिर और दस सींग हैं, और उसके सिर पर दस मुकुट हैं। और पद 9 में उसे स्वयं शैतान के रूप में पहचाना गया है। यूहन्ना के दर्शन में अजगर की पूंछ ने आकाश के तारों की एक तिहाई को खींचकर पृथ्वी पर डाल दिया। यह कार्य शायद उन स्वर्गदूतों को दर्शाता हो जो गिर कर दुष्टात्माएँ बन गए थे, या फिर यशायाह 34:4 और मरकुस 13:25 की राजनैतिक उठापटक को ही दर्शाता हो। अजगर ने उस स्त्री और उसके बच्चे पर आक्रमण किया, जो परमेश्वर के लोगों और शैतान के बीच चल रहे बड़े संघर्ष को दर्शाता है।

अजगर के इतिहास में स्वर्ग में भी एक युद्ध चल रहा था, जिसमें मीकाईल और स्वर्गदूत अजगर से लड़े। मीकाईल ने शैतान और उसके दूतों को पृथ्वी पर फेंक दिया। पृथ्वी पर फेंके जाने के बाद, शैतान ने स्त्री का पीछा किया कि उसको सताए। परंतु परमेश्वर ने उसे बचाया, इसलिए शैतान उसकी संतान पर, अर्थात् उन विश्वासियों पर जो मसीह की आज्ञा मानते हैं और मसीह की गवाही को बनाए रखते हैं, आक्रमण करने को मुड़ा। इस प्रतीकात्मक इतिहास ने यूहन्ना के पाठकों को यह समझने में सहायता की होगी कि वे परमेश्वर के प्रति शैतान की घृणा के कारण सताए जा रहे हैं, और वे आत्मिक युद्ध के बीच में हैं। फिर भी, शैतान पहले से ही हारा हुआ था, और कलीसिया तब तक ही सताव को सहेगी जब तक इस पृथ्वी पर अजगर का सीमित समय समाप्त नहीं हो जाता है।

तीसरा प्रतीकात्मक इतिहास समुद्र से निकलने वाले पशु के चारों ओर घूमता है, और यह प्रकाशितवाक्य 13:1-10 में पाया जाता है। इस पशु में दानिय्येल 7 के पशुओं के समान सिंह, भालू और एक चीते के गुण थे, जिसने मूर्तिपूजक राज्यों को प्रस्तुत किया। यह सुझाव देता है कि समुद्र से निकला

हुआ पशु उन सभी राजनैतिक शक्तियों का प्रतीक है जो यीशु मसीह के राज्य का विरोध करते हैं। यूहन्ना ने यह भी लिखा कि इस पशु पर पहले से एक घाव था जो कि प्राणघातक रहा होगा।

अजगर ने समुद्र से निकलने वाले पशु को इस पृथ्वी के राज्यों पर शक्ति और अधिकार प्रदान किया, और इस पृथ्वी के सब निवासियों ने उस पशु की आराधना की। उसे पवित्र लोगों के विरूद्ध युद्ध करने और उन पर विजय प्राप्त करने की शक्ति दी भी गई थी। यूहन्ना के पाठकों ने शायद इस पशु को रोमी सम्राट या साम्राज्य से, और साथ ही सम्राट की आराधना से भी जोड़ा होगा। उन्होंने पशु का विरोध करने, और मसीह के प्रति विश्वासयोग्य बने रहने की आवश्यकता का अनुभव किया होगा।

चौथा प्रतीकात्मक इतिहास दूसरे पशु पर केंद्रित है — वह जो पृथ्वी से निकलता है। यह इतिहास प्रकाशितवाक्य 13:11-18 में पाया जाता है। पृथ्वी से निकलनेवाले पशु के मेम्ने के समान दो सींग थे, परंतु वह अजगर के समान बोलता था। इसने समुद्र से निकलनेवाले पशु का कार्य किया, और आश्चर्यजनक चिह्नों को प्रकट किया ताकि संसार उस दूसरे पशु की आराधना करने के लिए बाध्य हो। इसने लोगों को उनके दाहिने हाथ या मस्तक पर पशु का चिह्न छपवाने को भी बाध्य किया। एक साथ मिलकर इन दोनों पशुओं ने पूरे संसार पर विजय पाने का प्रयास किया।

यूहन्ना के पाठकों ने शायद इस दूसरे पशु को उस रोमी नागरिक पंथ के साथ जोड़ा होगा जो सम्राट की आराधना करने के लिए बाध्य करता था, और सम्राट की आराधना करने से इनकार करनेवालों को मार डालता था। समुद्र से निकले पशु के इतिहास के समान, इसने उन्हें मूर्तिपूजा का विरोध करने और यीशु के प्रति विश्वासयोग्य रहने के लिए उत्साहित किया होगा।

पाँचवाँ प्रतीकात्मक इतिहास उन 1,44,00 विश्वासियों के विषय में है जो परमेश्वर से संबंध रखते हैं, और यह प्रकाशितवाक्य 14:1-5 में पाया जाता है। इस तथ्य पर आधारित होकर कि परमेश्वर का नाम उनके मस्तक पर छपा है, ऐसा लगता है कि वे लोग वही समूह थे जिनका उल्लेख प्रकाशितवाक्य 7:1-8 में है। उनके मस्तक पर परमेश्वर के नाम की मुहर की विपरीतता उन लोगों के मस्तक पर पशु के चिह्न में दिखाई देती है जो पृथ्वी पर पशु की आज्ञा मानते हैं। यूहन्ना के दर्शन में ये 1,44,000 विश्वासी मेम्ने के साथ सिय्योन पहाड़ पर परमेश्वर की स्तुति करते हुए खड़े हुए।

इस प्रतीकात्मक इतिहास ने यूहन्ना के पाठकों को आश्वस्त किया कि अंततः विश्वासी अजगर और पशुओं से बच जाएँगे और परमेश्वर की आशीषों को प्राप्त करेंगे। बड़े सतावों के बावजूद भी, विश्वासयोग्य विश्वासी पवित्र और निर्दोष पाए जाएँगे।

छठा प्रतीकात्मक इतिहास तीन स्वर्गीय संदेशवाहकों का दर्शन है, जो प्रकाशितवाक्य 14:6-11 में पाया जाता है। यूहन्ना के दर्शन में पहले स्वर्गदूत ने लोगों को परमेश्वर का भय रखने और उसकी आराधना करने की बुलाहट देते हुए अनंत सुसमाचार की घोषणा की। दूसरे स्वर्गदूत ने उस बड़े बेबीलोन के पतन की घोषणा की, जो यीशु मसीह के राज्य का विरोध करनेवाले लोगों की राजधानी था। और तीसरे स्वर्गदूत ने उन सब लोगों के अंतिम दंड की घोषणा की जिन्होंने पशु का अनुसरण किया था और उसकी आराधना की थी। इन संदेशवाहकों ने बताया कि मसीह का सुसमाचार प्रत्येक विरोधी राज्य पर विजय प्राप्त करेगा, और यह कि जब यीशु वापस आएगा तो उसके सारे शत्रुओं को अनंतकाल के लिए दोषी ठहराएगा।

इन स्वर्गीय संदेशवाहकों के बारे में यूहन्ना के विवरण ने उसके पाठकों को उत्साहित किया होगा, कि यद्यपि कई बार ऐसा लगता हो कि कलीसिया पराजित हो रही है, फिर भी मसीह का राज्य अंततः अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त करेगा। और यदि यूहन्ना का कोई भी पाठक सताव से बचने के लिए सम्राट की आराधना करने को सोच रहा होगा, तो इस इतिहास ने उसको चेतावनी दी होगी कि वे इस परीक्षा का सामना करें।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

स्वर्गीय संदेशवाहकों के बाद, यूहन्ना ने प्रकाशितवाक्य 14:12-13 में एक छोटे अंतराल को रखा। इस अंतराल में, यूहन्ना ने परमेश्वर के लोगों को दृढ़ बने रहने, अर्थात् अपने चारों ओर की मूर्तिपूजक संस्कृति का विरोध करने के लिए उत्साहित किया। और स्वर्ग से आई आवाज़ों ने घोषणा की कि जो विश्वासयोग्य बने रहे, वे अंततः परमेश्वर की आशीषों और विश्राम को प्राप्त करेंगे।

अंतिम प्रतीकात्मक इतिहास "मनुष्य के पुत्र सरीखा" जैसे किसी का वर्णन करता है, जो श्वेत बादल पर बैठा है और अपनी फसल काटने के लिए आता है। उसका इतिहास प्रकाशितवाक्य 14:14-20 में पाया जाता है। वाक्यांश "मनुष्य के पुत्र सरीखा" का प्रयोग प्रकाशितवाक्य 1:13 में भी किया गया है, जहाँ यह विशेष रूप से यीशु को दर्शाता है। और प्रकाशितवाक्य 14 के कार्यों और संदर्भ से यह स्पष्ट है कि यह मनुष्य का पुत्र मसीह ही है। इस इतिहास में रूपक दानिय्येल 7:13 से लिया गया है, जहाँ एक "मनुष्य के पुत्र सरीखा" व्यक्ति परमेश्वर के स्वर्गीय न्यायालय में प्रवेश करने के लिए बादलों पर सवार होकर आता है।

इस श्रृंखला के पहले इतिहास में, अर्थात् स्त्री के इतिहास में, यीशु को एक बच्चे के समान दर्शाया गया था जिसे स्वर्ग में उठा लिया गया था। परंतु इन इतिहासों के समापन पर, यीशु को मनुष्य के पुत्र के रूप में चित्रित किया गया था जो गेहूँ की कटनी करनेवाले के समान अपने विश्वासयोग्य अनुयायियों की कटनी काट रहा था। फिर दूसरे कटाई करनेवाले ने — जो कि स्वर्गदूत है — संसार के बचे हुए लोगों की कटनी काटी और उनके लहू को परमेश्वर के क्रोध के रसकुंड में भर दिया। इस दर्शन ने यीशु की अंतिम भावी विजय की घोषणा की। इसने दर्शाया कि इतिहास एक बड़े समापन की ओर बढ़ रहा है, जहाँ जो यीशु के प्रति विश्वासयोग्य हैं, वे निर्दोष ठहराए जाएँगे, परंतु जो विश्वासयोग्य नहीं है वे नाश किए जाएँगे।

यहून्ना के मूल पाठकों ने इसे उत्साहवर्धक पाया होगा। उन्होंने पहचान लिया होगा कि उनका दुःख उसकी तुलना में कुछ नहीं था जितना क्रोध परमेश्वर अपने शत्रुओं पर उंडेलेगा। और उन्होंने इस सच्चाई, आशा और भरोसे को प्राप्त किया होगा कि अंततः वे निर्दोष ठहराए जाएँगे और आशीष पाएँगे।

> हम अक्सर अपने में इस विषय पर एक असमंजस को अनुभव करते हैं कि कैसे एक प्रेमी परमेश्वर अपने शत्रुओं समेत लोगों को नरक में भेज सकता है। और मेरा विचार है कि वह एक कारण जिससे हम कई बार संघर्ष करते हैं, यह है कि हमने परमेश्वर के प्रेम की विशिष्टता को अमूर्त बना दिया है — जो वास्तव में सच्ची विशेषता है — हमने इसे उसके चरित्र से अलग कर कर दिया है, हमने इसे पवित्रशास्त्र के विवरण से अलग कर दिया है, और हम इसे जरूरत से अधिक भावुक बना देते है। हमें सावधान रहना चाहिए कि हम कहीं परमेश्वर के चरित्र की संपूर्ण वास्तविकता को विभाजित न कर दें। और यदि हम परमेश्वर के प्रेम के विषय में अपनी समझ को उसकी पवित्रता के बारे में अपनी समझ के साथ जोड़ दें, तो हम जान जाएँगे कि यद्यपि नरक एक गंभीर वास्तविकता है और अंतिम न्याय एक गंभीर वास्तविकता है, फिर भी परमेश्वर पूर्णतया सही है और पश्चाताप न करनेवालों को नरक में भेजने में न्यायपूर्ण है, और वास्तव में, यदि वह ऐसा नहीं करता, तो हम ऐसा नहीं कह सकते कि वह भला है। यदि परमेश्वर उस सच्चे परमेश्वर की आराधना का सम्मान न करे, जिस तरह से वह पवित्रशास्त्र में करता है, तो हम यह नहीं कहेंगे कि वह अच्छा है, यदि वह पाप की ओर तिरछी निगाहों से देखे और ऐसा व्यवहार करे जैसे कि यह कोई बड़ी बात न हो। अत: परमेश्वर का प्रेम ऐसी विशेषता है जिसे समझना महत्वपूर्ण है। हम इसे अमूर्त बनाकर पवित्रशास्त्र में प्रकट परमेश्वर के चरित्र के विषय में अपने शेष ज्ञान से अलग-थलग करना नहीं चाहते हैं।

— डॉ. रोबर्ट जी. लिस्टर

प्रतीकात्मक इतिहास के दर्शन की श्रृंखला ने यूहन्ना के मूल पाठकों को स्मरण दिलाया होगा कि मसीह ने क्रूस पर शैतान को पहले से ही हरा दिया था। और क्योंकि शैतान मसीह को उसके पहले आगमन पर हरा नहीं सका था, इसलिए विश्वासियों को पूरा भरोसा होना चाहिए कि शैतान इस बार भी असफल हो जाएगा। अंततः, मसीह वापस आएगा और शैतान और उसके पशुओं को नाश कर देगा। और इसी बीच, विश्वासी सताव को केवल अपने पराजित शत्रु के अंतिम प्रयासों के फलस्वरूप ही सहते हैं।

अब जबकि हमने सात मुहरों, सात तुरहियों और सात प्रतीकात्मक इतिहासों का सर्वेक्षण कर लिया है, इसलिए आइए हम आने वाली घटनाओं के बारे में दर्शनों की चौथी श्रृंखला की ओर मुड़ें : प्रकाशितवाक्य 15 और 16 में परमेश्वर के प्रकोप के सात कटोरे।

सात कटोरे

सात कटोरों का दर्शन सात स्वर्गदूतों को दर्शाता है जो दुष्ट लोगों के विरूद्ध परमेश्वर के प्रकोप के सोने के सात कटोरों को उंडेलते हैं। यह दर्शन भी मुहरों, तुरहियों और इतिहासों के दर्शनों की संरचना का ही अनुसरण करता है : छः कटोरों के बाद एक अंतराल आता है, और तब सातवाँ कटोरा उंडेला जाता है।

और ऐसी अन्य समानांतर बातें भी हैं जिन पर ध्यान देना महत्वपूर्ण है। उदाहरण के लिए, पहली चार तुरहियों के समान, पहले चार कटोरों ने संसार के चार मुख्य क्षेत्रों को नष्ट कर दिया : सूखी जमीन, समुद्र, स्वच्छ पानी, और आकाश। परंतु जहाँ तुरहियों के दंड ने पृथ्वी के केवल एक तिहाई भाग को ही प्रभावित किया था, वहीं कटोरों ने पूरे संसार को प्रभावित कर दिया था।

पहले कटोरे ने उन सब लोगों को दुखदाई फोड़ों की महामारी से ग्रसित किया जिन पर पशु की छाप थी और जो उसकी पूजा करते थे। दूसरे कटोरे ने समुद्र को लहू में बदल दिया। तीसरे कटोरे ने नदियों और सोतों के स्वच्छ पानी को लहू में बदल दिया। और चौथे कटोरे ने सूर्य से जला देनेवाली गर्मी को पैदा किया। इन विनाशकारी विपत्तियों के बावजूद भी लोगों ने परमेश्वर की निंदा की और मन फिराने से इनकार कर दिया।

पाँचवाँ कटोरा पशु के सिंहासन पर उंडेला गया। प्रकाशितवाक्य 13 से यह स्पष्ट हो जाता है कि यह पशु समुद्र से निकला हुआ है, जिसके शासन को पृथ्वी से निकलनेवाले पशु से समर्थन मिला था। इस कटोरे ने पशु के राज्य को अंधकार में डाल दिया, परंतु फिर भी इसके अनुयायियों ने परमेश्वर की निंदा की और मन फिराने से इनकार कर दिया। जब छठा कटोरा उंडेला गया, तो इसने फुरात नदी को सुखा दिया, जिससे पूर्व दिशा के राजाओं के लिए मार्ग खुल गया कि वे परमेश्वर की प्रतिज्ञा की भूमि पर आक्रमण करें।

प्रकाशितवाक्य 16:16 के अनुसार पूर्व के राजाओं और परमेश्वर के लोगों के बीच हरमगिदोन या मगिद्दो की पहाड़ी पर एक निर्णायक युद्ध लड़ा जाएगा। प्राचीन इस्राएल में मगिद्दो एक मुख्य नगर था जो मेसोपोटामिया और मिस्र के राज्यों के बीच व्यापार के मुख्य मार्ग के पास बसा हुआ था। बड़ी सेनाएँ पड़ोस की यिज्रेल की घाटी में इकट्ठी हो सकती थीं, या जैसा कि कई बार इसे ऐसद्रालोन के मैदान के नाम से भी जाना जाता है। और परमेश्वर के लोगों ने पहले भी मगिद्दो में हुए युद्धों में विजय प्राप्त की थी। अत: यह परमेश्वर के सेवकों और उसके शत्रुओं के बीच लड़े जानेवाले अंतिम युद्ध के वर्णन का उपयुक्त प्रतीक था।

इसके बाद, प्रकाशितवाक्य 16:15 में यूहन्ना के दर्शन में एक अंतराल आता है, जहाँ हम इस घोषणा को पढ़ते हैं :

> देख, मैं चोर के समान आता हूँ; धन्य वह है जो जागता रहता है, और अपने वस्त्र की चौकसी करता है कि नंगा न फिरे, और लोग उसका नंगापन न देखें (प्रकाशितवाक्य 16:15)।

प्रकाशितवाक्य 3 में सरदीस की कलीसिया को संबोधित अपने पत्र को स्मरण करते हुए, मसीह ने अपने अनुयायियों को हर समय सावधान रहने और विश्वासयोग्य बने रहने के लिए उत्साह किया।

अंतराल के बाद, सातवें कटोरे ने दुष्ट लोगों के अंतिम विनाश को आगे बढ़ाया। बड़े गर्जन हुए और बिजलियाँ चमकीं। भूकंप ने राष्ट्रों के नगरों को तहस नहस कर दिया। टापू डूब गए। पहाड़ टुकड़े-टुकड़े हो गए। और बड़े-बड़े ओलों ने मनुष्यजाति को कुचल दिया। यह युग का अंत था — अर्थात् वर्तमान संसार का विनाश जो मसीह के पुनरागमन के समय होगा।

सात कटोरों की श्रृंखला के साथ आने वाली घटनाओं के विषय में यूहन्ना का दर्शन समाप्त हो गया। मुहरों, तुरहियों, इतिहासों और कटोरों ने परमेश्वर की इस प्रतिबद्धता को प्रकट किया की वह अपने लोगों की सुरक्षा और आशीष को निश्चित करने हेतु इतिहास में हस्तक्षेप करेगा। यूहन्ना के दिनों में रोमी साम्राज्य एशिया माइनर की कलीसियाओं के लिए बहुत कष्टदाई था। और कलीसिया के बहुत से आधुनिक शत्रु उसी के समान शक्तिशाली प्रतीत होते हैं। परंतु परमेश्वर अपने शत्रुओं और हमारे शत्रुओं को नाश करने के लिए दृढ़ संकल्पी है। और इस बात से प्रत्येक युग के प्रत्येक विश्वासी को मसीह के प्रति विश्वासयोग्य बने रहने के लिए उत्साहित होना चाहिए, यहाँ तक कि तब भी जब हम कड़े विरोध और सताव को सहते हैं।

अब जबकि हमने यूहन्ना के पहले और दूसरे दर्शनों की जाँच कर ली है, इसलिए आइए हम प्रकाशितवाक्य 17:1-21:8 में बड़ी वेश्या को दिए गए दंड के उसके दर्शन की ओर मुड़ें।

बड़ी वेश्या

यह दर्शन जंगल में घटित होता है। प्रकाशितवाक्य 17:1 के अनुसार यह पूरा दर्शन बड़ी वेश्या के दंड पर ध्यान देता है, जिसमें मसीह का पुनरागमन, एक अंतिम युद्ध जिसमें बुराई की शक्तियाँ पूरी तरह से पराजित हो जाती हैं, मसीह के प्रति विश्वासयोग्य लोगों के शासन करने, और स्वर्ग और पृथ्वी का अंतिम नवीनीकरण भी शामिल है। यूहन्ना ने इस भाग की रचना इसलिए की कि वह अपने पाठकों का ध्यान मसीह के प्रति विश्वासयोग्य रहनेवालों की अंतिम आशीषों, और विश्वासयोग्य न रहनेवालों पर पड़नेवाले अंतिम श्रापों की ओर लगाए। इस द्विभागी ध्यान ने उसके पाठकों को प्रेरित किया होगा कि परमेश्वर की आशीषों को खोजें और उसके दंड से बचें।

बड़ी वेश्या के दंड के दर्शन के बीच में ही दर्शनों की दो छोटी श्रृंखलाएँ हैं। पहली बेबीलोन पर परमेश्वर के दंड के संबंध में है, और दूसरी पवित्र लोगों के राज्य करने पर केंद्रित है। हम प्रकाशितवाक्य 17:1-19:21 में बेबीलोन के दंड के साथ आरंभ करके इन दोनों श्रृंखलाओं पर ध्यान देंगे।

बेबीलोन पर दंड

यूहन्ना के मुहरों, तुरहियों, इतिहासों और कटोरों के दर्शनों के समान, बेबीलोन के दंड से संबंधित उसके दर्शन भी कलीसियाई इतिहास की पुनरावृत्ति करते हैं।

प्रकाशितवाक्य 17:1-6 में बेबीलोन नगर को एक वेश्या के रूप में प्रस्तुत किया गया है। वह आकर्षक वस्त्र पहने हुए है, और वह सोने, बहुमूल्य पत्थरों, और मोतियों से चमक रही है। उसकी दिखावट और वेश्यावृत्ति उन सब अनैतिक अभिलाषाओं की प्रतीक है जो परमेश्वर के लोगों को सच्ची आराधना और विश्वासयोग्य जीवन से दूर करने के लिए प्रलोभित करती हैं। परंतु महत्वपूर्ण बात यह कि वह जंगल में है, जो दर्शाता है कि वह विलासिता और आनंद के अपने प्रस्तावों को पूरा नहीं कर सकती।

और इस बात की पुष्टि करने के लिए वह अपने हाथ में एक कटोरा लिए हुए है जो घृणित वस्तुओं और उसके व्यभिचार की अशुद्ध वस्तुओं से भरा हुआ है।

यह वेश्या एक लाल रंग के पशु पर बैठी है जिसके सात सिर और दस सींग है। यह प्रकाशितवाक्य 13 में उल्लिखित समुद्र से निकलनेवाला पशु है। यह निंदा के नामों से भरा हुआ था, जो उसकी अपनी दुष्टता और उसके अनुयायियों की मूर्तिपूजा को दर्शाता है।

वेश्या और पशु के रूपक का महत्व तब शेष श्रृंखला में प्रकट किया गया है। मुहरों, तुरहियों, इतिहासों और कटोरों की पिछली श्रृंखलाओं के समान इस श्रृंखला की संरचना भी दंड और विलाप के छः संदेशों को प्रस्तुत करती है, और उसके बाद एक अंतराल आता है। परंतु सातवें संदेश में मसीह और उसके शत्रुओं के बीच अंतिम युद्ध का विवरण देने की अपेक्षा यह श्रृंखला युद्ध के दर्शन के साथ ही समाप्त हो जाती है।

प्रकाशितवाक्य 17:7-18 में पाया जानेवाला पहला संदेश वेश्या और पशु के दर्शन के विवरण की व्याख्या करता है। हम यह कहते हुए इस संदेश को सारगर्भित कर सकते हैं कि परमेश्वर उसका विरोध करनेवाले सब लोगों और सब वस्तुओं का पूरी तरह से नाश कर देगा।

प्रकाशितवाक्य 18:1-3 में पाया जानेवाला दूसरा संदेश बेबीलोन, और उन सारे राष्ट्रों, राजाओं और व्यापारियों की पूर्ण पराजय की घोषणा करता है जिन्हें उसने प्रलोभित किया था।

प्रकाशितवाक्य 18:4-8 में पाया जानेवाला तीसरा संदेश परमेश्वर के लोगों को बेबीलोन को ठुकराने और अपने आपको उसकी अनैतिकता से अलग करने के लिए बुलाता है।

और प्रकाशितवाक्य 18:9-20 में पाए जानेवाले चौथे संदेश में उन राजाओं, व्यापारियों और नाविकों के तीन विलाप मिलते हैं जिन्होंने पशु की पूजा की थी और बेबीलोन की विलासिता से लाभ उठाया था। दुखद रूप से, इन विलापों ने पश्चाताप और मसीह में विश्वास के लिए प्रेरित नहीं किया। इसकी अपेक्षा, राजाओं, व्यापारियों और नाविकों ने बेबीलोन की खुशहाली के बीते समय की ओर बड़ी लालसा के साथ देखा।

प्रत्येक संदेश में, बेबीलोन उस प्रत्येक राष्ट्र और संगठन को प्रस्तुत करता है जो मसीह के शासन का विरोध करता है। ये संदेश इस बात की घोषणा करने के द्वारा मसीह के अनुयायियों को उत्साहित करते हैं कि प्रभु अपने सारे शत्रुओं को नाश करेगा, और दुष्ट अपने पापपूर्ण आनंदों को खो देने के कारण विलाप करेंगे। परंतु ये संदेश कलीसिया को भी चेतावनी देते हैं कि वह ऐसे पाप न करे, ताकि हम पर भी वैसा ही दंड न आ पड़े।

> मेरे विचार से मूर्तिपूजा और अनैतिकता अविश्वासियों के लिए बहुत आकर्षित करनेवाली है, परंतु साथ ही यह विश्वासियों के लिए भी उतनी ही आकर्षक है। यह बहुत ही सामान्य बात है। यह प्रतिबंधित फल है। यह वह है जो मैं चाहता हूँ। हो सकता है कि यह कुछ ऐसा है जो मुझे नहीं लेना चाहिए, परंतु हमारे भीतर कुछ ऐसा है जो कहता है कि बस इसे ले लो। परंतु मैं इस बिंदु पर अधिक सोचता हूँ, बस अक्सर यह अधिक अच्छा लगता है, अनैतिकता अच्छी लगती है। यह पल भर में प्यास बुझा देती है, परंतु यही तो ध्यान देने की बात है। कोई बात जो पल भर में प्यास बुझा देती है, जरुरी नहीं है कि वह अपने महत्व में स्थाई, अच्छी और पवित्र हो, और इसीलिए हमें यह कहने के लिए विश्वास में चलने की आवश्यकता है, "जिसे बाइबल मूर्तिपूजा कहती है, जिसे बाइबल अनैतिकता कहती है, मैं आगे बढ़कर उन परिभाषाओं को स्वीकार करूँगा। यद्यपि अभी यह अच्छा अहसास न कराए, परंतु मैं जानता हूँ कि इसमें एक स्थाई मूल्य है।" और फिर से, यह हमें वह मार्ग दिखाता है जिसमें परमेश्वर चाहता है कि हम जीएँ।

— डॉ. मैट फ्रीडमैन

बेबीलोन के दंड का पाँचवाँ संदेश प्रकाशितवाक्य 18:21-24 में पाया जाता है, और बेबीलोन के पूर्ण और स्थाई विनाश की घोषणा करता है।

इस श्रृंखला का छठा संदेश प्रकाशितवाक्य 19:1-8 में है, और स्वर्ग में परमेश्वर के लोगों द्वारा प्रफ्फुलित स्तुति को दर्शाता है। बेबीलोन के विरूद्ध दंड की घोषणा प्रत्युत्तर में परमेश्वर के विश्वासयोग्य लोग उसकी स्तुति करते हैं। और उनकी स्तुति तब निरंतर जारी रहती है जब वे देखते हैं कि बेबीलोन को दिए गए दंड ने मेम्ने, अर्थात् मसीह, और दुल्हन, अर्थात् कलीसिया के बीच विवाह के मार्ग को खोल दिया है।

तब, प्रकाशितवाक्य 19:9-10 में आनेवाला एक अंतराल संदेशों को रोक देता है। इस अंतराल में यूहन्ना से कहा जाता है कि वह उन सब लोगों के लिए एक आशीष को लिखे जो मेम्ने के विवाह भोज में शामिल होते हैं।

अंत में, परमेश्वर और उसके शत्रुओं के बीच अंतिम युद्ध के साथ दर्शन की यह श्रृंखला समाप्त होती है, जिसका वर्णन प्रकाशितवाक्य 19:11-21 में किया गया है। मसीह ईश्वरीय योद्धा के रूप में प्रकट होता है और परमेश्वर के सारे शत्रुओं के विरूद्ध युद्ध करता है। इन शत्रुओं की अगुवाई पशु और झूठा भविष्यवक्ता करते हैं, जो प्रकाशितवाक्य 13 के समुद्र से निकलनेवाला पशु और पृथ्वी से निकलनेवाला पशु हैं। और इनमें कोई प्रतिस्पर्धा नहीं है; पशु और झूठे भविष्यवक्ता को अनंतकाल तक के लिए पराजित कर दिया गया है। सुनिए प्रकाशितवाक्य 19:20 उनके पतन का वर्णन कैसे करता है :

> वह पशु, और उसके साथ वह झूठा भविष्यद्वक्ता पकड़ा गया जिसने उसके सामने ऐसे चिह्न दिखाए थे . . . ये दोनों जीते जी उस आग की झील में, जो गन्धक से जलती है, डाले गए (प्रकाशितवाक्य 19:20)।

अंतिम युद्ध उन सभी युद्धों को समाप्त करता है जो परमेश्वर ने अपने लोगों के लिए लड़े हैं, और उस विजय को पूरा करता है जो मसीह ने क्रूस पर प्राप्त की थी।

अब जबकि हमने बेबीलोन को दिए दंड का अध्ययन कर लिया है, इसलिए आइए हम प्रकाशितवाक्य 20:1-21:8 में पवित्र लोगों के राज्य करने से संबंधित श्रृंखला पर ध्यान दें।

पवित्र लोगों का राज्य करना

पवित्र लोगों के राज्य करने पर आधारित इस श्रृंखला में तीन भाग पाए जाते हैं; इनका आरंभ प्रकाशितवाक्य 20:1-10 में पवित्र लोगों के एक हजार वर्ष तक राज्य करने, जिसे सामान्यतः सहस्त्राब्दी कहा जाता है, से होता है।

एक हजार वर्ष का राज्य इस भाग में, यूहन्ना ने एक स्वर्गदूत को स्वर्ग से उतरते और बड़े अजगर, जो कि शैतान है, को बाँधते हुए देखा। यूहन्ना ने देखा कि अगले हजार वर्ष तक शैतान बँधा रहेगा जबकि शहीद हुए विश्वासयोग्य मसीही जी उठेंगे और मसीह के साथ राज्य करेंगे। यूहन्ना ने यह भी देखा कि हजार वर्ष बीतने के बाद, शैतान को मुक्त किया जाएगा कि परमेश्वर के विरूद्ध अंतिम युद्ध करने के लिए सभी राष्ट्रों को इकट्ठा करे, जैसा कि प्रकाशितवाक्य 19 में वर्णन किया गया है। इस युद्ध के अंत में, परमेश्वर के सारे शत्रुओं का स्थाई रूप से विनाश हो जाएगा। यहाँ तक कि स्वयं शैतान को भी जलती हुए गंधक की झील में फेंक दिया जाएगा।

अधिकांश व्याख्याकार यह स्वीकार करते हैं कि यूहन्ना की शेष प्रकाशन-संबंधी भविष्यवाणियों के समान, प्रकाशितवाक्य 20 भी बहुत ही प्रतीकात्मक है। और विश्वासी उन प्रतीकों की व्याख्या कई

भिन्न रूपों में करते हैं। वास्तव में प्रकाशितवाक्य की पूरी पुस्तक में इससे अधिक किसी विवादित अनुच्छेद को पाना कठिन होगा।

मौटे तौर पर कहें तो, इस अनुच्छेद के लिए व्याख्या की मुख्य चार विचारधाराएँ हैं। प्रत्येक का नाम आंशिक रूप से इस अनुच्छेद में उल्लिखित सहस्त्राब्दी या हजार वर्ष की इसकी समझ के अनुसार दिया गया है। व्याख्या की ये चार विचारधाराएँ हैं : ऐतिहासिक पूर्वसहस्त्राब्दीवाद (हिस्टोरिक प्रीमिलेनियलिज्म), युगात्मक पूर्वसहस्त्राब्दीवाद (डिस्पेंसेशनल प्रीमिलेनियलिज्म), सहस्राब्दीयोत्तरवाद (पोस्टमिलेनियलिज्म), और गैरसहस्त्राब्दीवाद (अमिलेनियलिज्म)।

ऐतिहासिक पूर्वसहस्त्राब्दीवाद और युगात्मक पूर्वसहस्त्राब्दीवाद दोनों ही पूर्वसहस्त्राब्दीवादी पद्धतियाँ हैं, अर्थात् वे मानते हैं कि मसीह सहस्त्राब्दी के आरंभ होने से पहले वापस आएगा। इसके विपरीत सहस्राब्दीयोत्तरवाद और गैरसहस्त्राब्दीवाद दोनों सहस्राब्दीयोत्तरवादी पद्धतियाँ हैं, अर्थात् वे मानते हैं कि यीशु सहस्त्राब्दी के समाप्त होने के बाद वापस आएगा। आइए हम प्रत्येक पद्धति को थोड़े और विस्तार से देखें।

ऐतिहासिक पूर्वसहस्त्राब्दीवाद को "ऐतिहासिक" इसलिए कहा जाता है क्योंकि यह पूर्वसहस्त्राब्दी का ही दृष्टिकोण है जिसे संपूर्ण इतिहास में विभिन्न समूह और धर्मविज्ञानी मानते आए हैं। यह सिखाता है कि यीशु के पुनरागमन के बाद शैतान को बाँध दिया जाएगा और यीशु सहस्त्राब्दी — अर्थात् पृथ्वी पर हजार-वर्ष के लिए शांति और खुशहाली का समय — का आरंभ करेगा। सहस्त्राब्दी के आरंभ में विश्वासी पुनरुत्थानित शरीरों को प्राप्त करेंगे। अविश्वासी पुनरुत्थानित शरीरों को प्राप्त नहीं करेंगे। वे वर्तमान के समय से ज्यादा लंबा जीवन जीएँगे परंतु उनकी भी मृत्यु होगी। जब सहस्त्राब्दी का अंत होगा, तो शैतान विद्रोह करेगा, जिसके बाद अंतिम न्याय होगा। और तब नई पृथ्वी और नए स्वर्ग पर परमेश्वर का अनंतकाल का राज्य आरंभ होगा। यह दृष्टिकोण मानता है कि अध्याय 19 के बाद क्रमानुसार प्रकाशितवाक्य 20 आता है।

युगात्मक पूर्वसहस्त्राब्दीवाद को सिखाए जाने का आरंभ सन् 1830 के दशक में हुआ। इस दृष्टिकोण में भी भिन्नताएँ हैं, विशेषकर सहस्त्राब्दी से पहले होनेवाली अंतिम घटनाओं के समय के विषय में। परंतु सामान्यतः युगात्मक पूर्वसहस्त्राब्दीवाद यह सिखाता है कि जब यीशु वापस आएगा, तो वह इस्राएल राष्ट्र को पुनर्स्थापित करेगा और यरूशलेम के अपने सिंहासन से राष्ट्रों पर राज्य करेगा। सहस्त्राब्दी के अंत के निकट शैतान एक विद्रोह भड़काएगा, परंतु परमेश्वर शैतान और उसकी सेना को पूरी तरह से पराजित कर देगा। इसके बाद अंतिम न्याय होगा, और तब फिर नए स्वर्ग और नई पृथ्वी पर परमेश्वर का अनंत राज्य आरंभ होगा। ऐतिहासिक पूर्वसहस्त्राब्दी के समान यह दृष्टिकोण भी मानता है कि अध्याय 19 के बाद क्रमानुसार प्रकाशितवाक्य 20 आता है।

ऐतिहासिक और युगात्मक पूर्वसहस्त्राब्दीवाद के विपरीत सहस्राब्दीयोत्तरवाद सिखाता है कि यीशु सहस्त्राब्दी के बाद वापस आएगा। सहस्त्राब्दी को या तो मसीह के पहले और दूसरे आगमन के बीच की पूरी अवधि, या फिर उसके पुनरागमन से पहले के अंतिम हजार वर्ष को माना जाता है। जैसे भी हो, सहस्त्राब्दी के दौरान यीशु अपनी पृथ्वी पर की कलीसिया के माध्यम से स्वर्ग से राज्य करता है। और उसका राज्य बढ़ता हुआ पूरी पृथ्वी पर फैल जाता है और उसे बेहतर बनाता है।

गैरसहस्त्राब्दीवाद का शाब्दिक अर्थ है "सहस्त्राब्दी नहीं।" इसका नाम इस बात से आता है कि यह इस बात का इनकार करता है कि सहस्त्राब्दी शाब्दिक तौर पर हजार वर्ष का समय है। यह सिखाता है कि सहस्त्राब्दी यीशु के इस पृथ्वी पर अपनी कलीसिया के माध्यम से स्वर्ग से राज्य करने से संबंधित है; और यीशु सहस्त्राब्दी की समाप्ति पर वापस आएगा।

गैरसहस्त्राब्दीवाद कई रूपों में पूर्वसहस्त्राब्दीवाद से भिन्न है। पहला यह कि गैरसहस्त्राब्दीवाद के सभी प्रारूप पुष्टि करते हैं कि सहस्त्राब्दी मसीह के पहले और दूसरे आगमन के बीच की एक पूरी समयावधि है। दूसरी, गैरसहस्त्राब्दीवाद इस बात पर बल नहीं देता है कि यीशु और पवित्र लोगों का

सहस्त्राब्दीय शासन नियमित रूप से राज्य को बढ़ाएगा और इस संसार को बेहतर बनाएगा। गैरसहस्त्राब्दीवादी दृष्टिकोण से, मसीही पृथ्वी पर तब तक परमेश्वर के राज्य की आशीषों और महाक्लेश का अनुभव करेंगे जब तक मसीह के पुनरागमन पर अंतिम विजय को प्राप्त नहीं कर लिया जाता है।

> अंत समय के निकट कुछ होनेवाली घटनाओं के विषय में एक सामान्य, सार्वभौमिक — अर्थात् विश्वव्यापी — मसीही दृष्टिकोण है। और हम उन बुनियादी धर्मशिक्षाओं, इसके तत्वों को प्रेरितों के विश्वास-कथन में देख सकते है। उदाहरण के तौर पर, प्रेरितों का विश्वास-कथन कहता है कि यीशु स्वर्ग पर चढ़ गया, और स्वर्ग से वह जीवतों और मृतकों का न्याय करने के लिए वापस आएगा। अतः हम सब मानते हैं कि एक अंतिम न्याय होगा, और यीशु वापस आएगा और वह उसमें शामिल होगा, अर्थात् जीवतों और मृतकों के न्याय में। और अब निस्संदेह, इन बातों के विषय में हममें असहमति है कि यह सब कैसे होगा, परंतु हम सब इस बात पर सहमत है कि ऐसा होगा। और फिर प्रेरितों के विश्वास-कथन में आगे यह भी कहा गया है कि हम "पापों की क्षमा, देह के पुनरुत्थान" पर विश्वास करते हैं। अब यह सार्वभौमिक पारंपरिक मसीहियत का एक तत्व है जिसे बहुत से मसीही लोग अब समझते भी नहीं हैं, वह यह कि हम यह विश्वास करते हैं कि देह का एक सामान्य भौतिक पुनरुत्थान भी होगा। कहने का अर्थ यह है कि लोग अनंतकाल के लिए आत्माओं के रुप में नहीं रहेंगे; वे अपनी देह फिर से प्राप्त करेंगे। वास्तव में, मसीही लोग महिमामय देहों को प्राप्त करेंगे, ठीक वैसे ही जैसे यीशु ने अपने पुनरुत्थान में प्राप्त की थी। इस प्रकार, यह एक और शिक्षा है जो सब मसीहियों को माननी चाहिए, यद्यपि हम इसके विवरणों में एक-दूसरे से सहमत नहीं होते। अतः हम "देह के पुनरुत्थान और अनंत के जीवन में विश्वास करते हैं। आमीन" और यह कहने का अर्थ है कि इस न्याय और देहों के पुनरुत्थान के बाद, हम यह भी विश्वास करते हैं कि एक नया संसार, एक नया दिन, अनंत जीवन इत्यादि सब कुछ होगा, और बाइबल के अनुसार यह ऐसा कार्य नहीं है जो हम स्वर्ग में बादलों के बीच तैरते हुए करेंगे, इसकी अपेक्षा यह वहाँ होगा जिसे बाइबल "नया स्वर्ग और नई पृथ्वी" कहती है। इसलिए जब यीशु वापस आएगा, तो वह पृथ्वी पर राज्य करेगा और हम उसके साथ राज्य करेंगे। यह अंत समयों या युगांत के विषय में हमारे दृष्टिकोण के तत्व हैं जिनकी पुष्टि करने के लिए सारे संप्रदायों के मसीहियों को योग्य होना चाहिए।
>
> — डॉ. रिर्चड, एल. प्रैट, जूनियर

> हम इस बात पर सहमत है कि आने वाले समय में प्रभु यीशु मसीह का उसके सुसमाचार के द्वारा शासन और राज्य होगा, क्या उसमें उसकी व्यक्तिगत उपस्थिति अचानक होगी या अंत में होगी — इस बात पर हम स्पष्ट नहीं है — परंतु हम जानते हैं कि वह राज्य करेगा, वह शासन करेगा, और यह सुसमाचार की सामर्थ्य का प्रकटीकरण होगा। हम जानते हैं कि वह न्याय करेगा और वहाँ भेड़ों तथा बकरियों का न्याय होगा और कुछ लोग ऐसे होंगे जिन्हें अनंत दंड दिया जाएगा क्योंकि उनके पास उसके द्वारा मिलनेवाली पापों की क्षमा नहीं है, और फिर वहाँ ऐसे अन्य लोग भी होंगे जिन्हें उस महिमा में प्रवेश करने के लिए बुलाया जाएगा जो जगत की उत्पत्ति से पहले उनके लिए तैयार की गई है। हम जानते हैं कि ये बातें सत्य हैं। हम इन बातों पर सहमत हैं। हम जानते हैं कि स्वर्ग एक ऐसा

> स्थान होगा जहाँ धार्मिकता वास करती है और जहाँ मसीह स्वयं शासन करेगा, और हम उसमें महिमा प्राप्त करेंगे, और वहाँ यीशु मसीह की सामर्थ्य और अद्‌भुत चरित्र के विषय में कोई संदेह नहीं होगा। हम सब इन बातों पर सहमत हैं। और हम इन अंतिम बातों, जिसे शब्द एस्खाटोन से युगांत-विज्ञान भी कहा जाता है, के विषय में अन्य सत्यों को भी देख सकते हैं। प्रकाशितवाक्य की स्पष्टता के कारण जितनी बातों पर हम सहमत होते हैं, वह वास्तव में चकित करनेवाला है। और मेरे विचार से हमें उन क्षेत्रों पर अधिक ध्यान न देने में सावधान रहना चाहिए जिनमें हम असहमत होते हैं, यद्यपि, हमें इसके विषय में आपसी विचार-विमर्श करना चाहिए, परंतु हमें यह छाप नहीं छोड़नी चाहिए कि बाइबल अस्पष्ट है और हम वास्तव में इन बातों को समझ नहीं सकते, क्योंकि उसमें बहुत से महत्वपूर्ण सत्य पाए जाते हैं जिन पर हम सब सहमत होते हैं जब हम इन विषयों पर चर्चा करते हैं।
>
> — डॉ. थॉमस जे. नैटल्स

मसीह के अनुयायियों के लिए यह स्वीकार करना महत्वपूर्ण है कि सुसमाचारिक विश्वासी हमेशा सहमत नहीं होते, और सहस्त्राब्दी का प्रश्न ऐतिहासिक तौर पर विवादों का क्षेत्र रहा है। परंतु यह परवाह किए बिना कि सहस्त्राब्दी के किस दृष्टिकोण को हम लेते हैं, सभी सुसमाचारिक मसीही सहमत हो सकते हैं कि मसीह वापस आएगा और बुराई पर अंतिम विजय को प्राप्त करेगा, कि शैतान को अंततः पराजित कर दिया जाएगा, और परमेश्वर के लोग एक पुनर्स्थापित सृष्टि में सदा-सर्वदा मसीह के राज्य में वास करेंगे। हम सब इन मान्यताओं को स्वीकार करते हैं। और परिणामस्वरूप, सहस्त्राब्दी के विषय में बाइबल की शिक्षाओं से हम सब बड़े विश्राम और उत्साह को प्राप्त कर सकते हैं।

पवित्र लोगों के राज्य करने की श्रृंखला का दूसरा भाग प्रकाशितवाक्य 20:11-15 में परमेश्वर के शत्रुओं को दिए जानेवाले अंतिम दंड के विषय में है।

परमेश्वर के शत्रुओं का अंतिम न्याय उसके दर्शन के इस भाग में, यूहन्ना ने परमेश्वर को सारी मनुष्यजाति का उनके कामों पर आधारित न्याय करते हुए देखा। इस न्याय में वह प्रत्येक व्यक्ति शामिल था जो कभी इस संसार में रहा है। वे विश्वासी परमेश्वर के भयानक प्रकोप से बच गए जिनके नाम जीवन की पुस्तक में लिखे हुए थे। परंतु शेष मनुष्यजाति को उनके पापों के कारण दोषी ठहराया गया। अंतिम न्याय के इस पहलू ने संसार से पाप की उपस्थिति और इसके प्रभावों को पूरी तरह से हटा दिया, और नए स्वर्ग और नई पृथ्वी के लिए मार्ग खोल दिया।

अंततः पवित्र लोगों के राज्य करने की इस श्रृंखला का तीसरा भाग प्रकाशितवाक्य 21:1-8 में परमेश्वर के लोगों के अंतिम न्याय पर ध्यान देता है।

परमेश्वर के लोगों का अंतिम न्याय यूहन्ना ने देखा कि परमेश्वर के लोगों के लिए अंतिम न्याय एक बड़ी आशीष का कारण होगा। स्वर्ग और पृथ्वी को फिर से बनाया जाएगा, और नई पृथ्वी की राजधानी के रूप में एक नया यरूशलेम स्वर्ग से उतरेगा। यह प्रतीक इस तथ्य की ओर संकेत करता है कि नए स्वर्ग और नई पृथ्वी पर, परमेश्वर अपने लोगों के बीच में वास करेगा। परमेश्वर ने ऐसा पहले भी अदन वाटिका, मिलाप के तम्बू में, और मंदिर में किया था। और अब वह हमारे साथ मसीह में वास करता है। परंतु इस नए स्वर्ग और नई पृथ्वी में परमेश्वर के साथ हमारी संगति और भी बड़ी होगी, क्योंकि वह हमारे बीच अपनी महिमा प्रकट करेगा, और हम उसकी भौतिक उपस्थिति में सर्वदा के लिए वास करेंगे।

> मैं जिस बात पर यहाँ जोर देना चाहता हूँ, वह यह सच्चाई है कि हमारे पास नया स्वर्ग और नई पृथ्वी है, और जब प्रभु वापस आता है और प्रत्येक बात को पूरा

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> करता है, तो हमारे पास न केवल नई पृथ्वी होगी, बल्कि स्वर्ग भी अपने में एक नवीनता को प्राप्त करेगा।
>
> — डॉ. विलियम ऊरी

वेश्या के दंड के विषय में यूहन्ना के दर्शन का सर्वेक्षण करने के बाद, आइए हम मेम्ने की पत्नी के उसके दर्शन की ओर मुड़ें। यह दर्शन प्रकाशितवाक्य 21:9-22:5 में पाया जाता है।

मेम्ने की पत्नी

अपने चौथे दर्शन में, यूहन्ना ऊँचे पहाड़ पर उठा लिया गया। प्रकाशितवाक्य 21:9 के अनुसार यह दर्शन दुल्हन, अर्थात् मेम्ने की पत्नी के विषय में था, जो कि नया यरूशलेम है। इस दर्शन ने उस असीम सुंदरता, शांति, स्वास्थ्य, खुशहाली और आनंद का वर्णन किया जो तब आएगी जब यह संसार परमेश्वर के सब शत्रुओं के प्रभाव और उपस्थिति से शुद्ध हो जाएगा। और जब यूहन्ना के मूल पाठकों ने इसके बारे में पढ़ा, तो वे इसके आदर्शों के अनुसार जीने और मसीह के पुनरागमन पर उद्धार की पूर्णता की प्रतीक्षा करने के द्वारा परमेश्वर की आशीषों का अनुसरण करने के लिए उत्साहित हुए होंगे।

> प्रकाशितवाक्य के अंत में एक दृश्य जो हम देखते हैं, वह है नए नगर, अर्थात् नए यरूशलेम का प्रकट होना, जो इस पृथ्वी पर आता है। अतः यह इस पृथ्वी पर आता है। और हम यह भी देखते हैं कि इस नई वास्तविकता का एक मुख्य रूपक जीवन का वृक्ष है, जो उत्पत्ति 1 में अदन की वाटिका का स्पष्ट चित्रण है। अतः एक तरह से, सृष्टि का आरंभ वाटिका से होता है, परंतु दूसरे भाव में इसका अंत एक नगर में होगा; परंतु यह एक महत्वपूर्ण रूप में संबंधित प्रतीत होता है। जो रूपक मैंने दर्शाया है वह प्रकाशितवाक्य के मेरे अध्ययन के साथ काफी मेल खाता है कि ऐसा संसार जहाँ बुराई नहीं है, और यदि यह प्रस्ताव दिया जाता है, तो मेरे विचार से यह एक काफी आकर्षक विकल्प होगा, अर्थात् ऐसे संसार में रहना जहाँ पर कोई रोना न हो, जहाँ पर कोई मृत्यु न हो, जहाँ कोई पीड़ा ना हो, जहाँ पर कोई दुःख न हो, और जहाँ हमारे और हमारे सृष्टिकर्ता परमेश्वर के बीच किसी तरह का कोई अलगाव न हो।
>
> — श्री ब्रैडले टी. जॉनसन

नए यरूशलेम का वर्णन प्रकाशितवाक्य 21:9-27 में किया है। इसे स्वर्ग में तैयार किया गया था, और फिर नई पृथ्वी पर लाया गया था। इस नगर को एक सिद्ध घन के रूप में रचा गया था। पुराने नियम में, मिलाप वाले तम्बू और मंदिर के अति पवित्र स्थान भी घनाकार थे। इसी प्रकार, जैसे परमेश्वर ने अति पवित्र स्थानों में अपनी पवित्र उपस्थिति को प्रकट किया, वैसे ही वह नए यरूशलेम में अपनी महिमा को अपने लोगों पर प्रकट करेगा।

नए यरूशलेम के पहलू और विवरण दोनों बार-बार संख्या बारह का उल्लेख करते हैं। पुराने नियम में यह संख्या इस्राएल के बारह गोत्रों से संबंधित है, जो उस युग में परमेश्वर के लोगों को दर्शाते हैं। और नए नियम में संख्या बारह का संबंध बारह प्रेरितों से है, जो वर्तमान युग में परमेश्वर के लोगों को दर्शाते हैं। यह दर्शाता है कि नए यरूशलेम में परमेश्वर के लोग अपनी सारी विविधिता और विशिष्ट संस्कृतियों में उपस्थित हैं।

नए यरूशलेम में ही परमेश्वर के सिंहासन से जीवन की नदी नगर में होकर बहती थी। इसने जीवन के वृक्ष को पोषण दिया, जिसकी पत्तियों से सब जातियों ने चंगाई प्राप्त की। इस बात ने यह दर्शाया कि नई पृथ्वी में पाप का श्राप सृष्टि से दूर कर दिया जाएगा। पूरा संसार पूरी तरह से नया बन जाएगा और पाप के साथ हुए उन सारे संघर्षों से चंगाई प्राप्त करेगा जिन्होंने पतित मनुष्यजाति को हमारे पूरे इतिहास के दौरान रोगी कर रखा है।

अंततः यूहन्ना ने देखा कि नया यरूशलेम परमेश्वर की महिमा से चमक उठा। शहर के आभूषणों और बहुमूल्य पत्थरों ने उसकी धनाढ्यता, सुंदरता और वैभव को दर्शाया। और इससे बढ़कर, यह परमेश्वर के वैभव से शहर भर गया, जिससे इसे सूर्य या चंद्रमा सहित प्रकाश के किसी और स्रोत की आवश्यकता नहीं पड़ी।

> प्रश्न यह है, "क्या प्रकाशितवाक्य 21 में प्रतिज्ञात नए स्वर्ग और पृथ्वी को लाने के लिए वर्तमान स्वर्ग और पृथ्वी को नाश कर दिया जाएगा?" कुछ लोग ऐसा सोचते हैं। मैं इसका वर्णन एक बड़े परिवर्तन के रूप में करूँगा — और शब्द बड़े को बहुत महत्व दूंगा। इसलिए कई रूपों में यह विनाश के जैसा ही है, परंतु यह नमूना मसीह की अपनी पुनरुत्थानित देह के नमूने जैसा ही है। उसकी पुनरुत्थानित देह उसकी मृत्यु से पहले की देह की तुलना में बदल गई थी, परंतु फिर भी उसके हाथों में कीलों से हुए छेद थे। यह हमारे पुनरुत्थान का नमूना है, और यदि आप रोमियों 8 को पद 18 से पढ़ना आरंभ करेंगे तो यह नमूना पूरे ब्रह्मांड के लिए भी है।
>
> — डॉ. वेर्न एस. पोयथ्रेस

> निश्चित रूप से नया स्वर्ग और नई पृथ्वी इस स्वर्ग और इस पृथ्वी से बहुत ही भिन्न होगी जिसके भाग हम अभी हैं, इसमें से श्राप को हटा दिया जाएगा, पतन के प्रभाव वहाँ नहीं होंगे, परंतु मेरा विचार यह भी है कि बहुत से मसीही लोग स्वर्ग का एक जरुरत से अधिक आत्मिक दृष्टिकोण रखते हैं जिसमें वह वास्तविक और भौतिक नया स्वर्ग और नई पृथ्वी नहीं पाई जाती जहाँ परमेश्वर बिल्कुल आरंभ से कार्य नहीं करता, परंतु वह उसे नया अवश्य बनाता है जो उसने पहले से ही बना दिया है। वह उसे पुनर्स्थापित करता है जिसे पतन में दुखद रूप से खो दिया गया था। और इस प्रकार, जो हमारे पास अब है और जो नए स्वर्ग और नई पृथ्वी में होगा उसके बीच काफी निरंतरता होगी यद्यपि इसे अद्भुत रूप से नया कर दिया जाएगा।
>
> — डॉ. के. एरिक थोनेस

अब जबकि हमने प्रकाशितवाक्य के यूहन्ना के परिचय और स्वर्गीय दर्शनों की उसकी श्रृंखला का अध्ययन कर लिया है, इसलिए आइए हम प्रकाशितवाक्य 22:6-21 में दिए गए पुस्तक के उपसंहार की ओर मुड़ें।

उपसंहार

यूहन्ना ने प्रकाशितवाक्य की पुस्तक की समाप्ति उन मूलभूत संदेशों पर बल देने के द्वारा की जिन्हें उसके दर्शनों में बार-बार दोहराया गया है। उसने बल दिया कि जिन दर्शनों को उसने प्राप्त किया था वे

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

विश्वासयोग्य थे, क्योंकि वे प्रभु के स्वर्गदूत के द्वारा उस तक पहुँचाए गए थे। उसने अपने पाठकों को भले कार्य करते रहने के लिए उत्साहित किया, ताकि वे नए स्वर्ग और नई पृथ्वी में बड़ी आशीषों को प्राप्त करें। और यूहन्ना ने अपने पाठकों को यह भी स्मरण कराया है कि परमेश्वर के राज्य की पूर्णता और अंतिम न्याय का भविष्य में होना बाकी है। इसलिए अभी, मसीहियों को विश्वासयोग्यता के साथ दृढ़ बने रहना चाहिए, और पापियों को पश्चाताप करने के अवसर का लाभ उठाना चाहिए।

प्रकाशितवाक्य परमेश्वर का अपने लोगों के लिए एक कालातीत संदेश है। यूहन्ना के दर्शनों के समय और उनकी पूर्णता के अपने दृष्टिकोण की परवाह किए बिना सभी मसीहियों को इस बात पर सहमत होना चाहिए कि प्रकाशितवाक्य की पुस्तक आज भी उतनी ही प्रासंगिक है जितनी यह तब थी जब यूहन्ना ने इसे लिखा था। हमारी परिस्थितियाँ अलग हो सकती हैं, परंतु हमारा परमेश्वर नहीं बदला है। और यूहन्ना ने जिन मूल्यों और दृष्टिकोणों को सिखाया था वे आज भी हम पर लागू होते हैं। हम अतीत, वर्तमान और भविष्य में परमेश्वर की भलाई से उत्साहित हो सकते हैं। हम अपने प्रति उसके प्रेम और इतिहास पर उसके नियंत्रण में भरोसा रख सकते हैं। और हम अब और अपने शेष जीवन में विश्वास के साथ उसको प्रत्युत्तर दे सकते हैं।

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के उद्देश्य और उसके विवरणों पर चर्चा कर लेने के बाद, हम अपने तीसरे मुख्य विषय को संबोधित करने के लिए तैयार हैं : प्रकाशितवाक्य के वर्तमान प्रयोग की रणनीतियाँ।

वर्तमान प्रयोग

प्रकाशितवाक्य के वर्तमान प्रयोग की हमारी चर्चा दो भागों में विभाजित होगी। पहला, प्रकाशितवाक्य की पुस्तक को लागू करने के लिए हम सामान्य रणनीतियों का वर्णन करेंगे और उनकी समीक्षा करेंगे। और दूसरा, हम एक ऐसी एकीकृत रणनीति का सुझाव देंगे जो चारों सामान्य रणनीतियों के तत्वों का प्रयोग करती हो। आइए पहले प्रकाशितवाक्य को लागू करने के लिए उन चार सामान्य रणनीतियों को देखें।

सामान्य रणनीतियाँ

पहली बात हमें यह कहनी चाहिए कि इन चारों रणनीतियों में से प्रत्येक के पास देने के लिए कुछ बहुत ही उपयोगी बात है, परंतु उनमें से कोई भी अपने आप में पूर्णतः पर्याप्त नहीं है। यह परिस्थिति हमें अंधे व्यक्तियों और हाथी की कहानी का स्मरण दिलाती है, जहाँ प्रत्येक अंधा व्यक्ति हाथी के उस भाग का वर्णन करता है जिसे वह छूता है, परंतु कोई भी पूरे हाथी को नहीं देखता है। यह कहानी विभिन्न संस्कृतियों में विभिन्न रूपों में पाई जाती है। हो सकता है कि एक व्यक्ति हाथी के पाँव को छुए और समझे कि हाथी एक खंबे के समान है। हो सकता है कि कोई उसके कान को छुए और समझे कि हाथी एक हाथ के पँखे जैसा है। हो सकता है कि कोई उसकी पूँछ को छुए और सोचे कि हाथी एक रस्सी के समान है। हो सकता है कि कोई उसकी सूंड को छुए और मान ले कि यह पानी के खंबे जैसा है। और इसी तरह से कोई कुछ भी समझता रहे। वे सब सही हैं जहाँ तक उनके मूल्याँकन की बात है, परंतु उनमें से कोई भी पूरे हाथी को नहीं देखता है।

इसी प्रकार, प्रकाशितवाक्य की पुस्तक की व्याख्या करने की बहुत सी प्रचलित परंतु अपर्याप्त रणनीतियाँ हैं। प्रत्येक रणनीति प्रकाशितवाक्य के प्रतीकों की जाँच करती है और उनकी व्याख्या अपने ही

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

दृष्टिकोण के अनुसार करती है। परंतु क्योंकि ये दृष्टिकोण बहुत ही सीमित हैं, इसलिए प्रत्येक दृष्टिकोण उस बड़ी तस्वीर और पूरे अर्थ से चूक जाता है जो प्रकाशितवाक्य के दर्शन प्रदान करते हैं।

वर्तमान प्रयोग की जिन चार सामान्य रणनीतियों का सर्वेक्षण हम इस अध्याय में करेंगे उन्हें अतीतवाद, भविष्यवाद, इतिहासवाद, और आदर्शवाद कहा जा सकता है। प्रत्येक इस बात में भिन्न है कि यह उस समय की व्याख्या कैसे करती है जिसे प्रकाशितवाक्य की पुस्तक दर्शाती है, और किस प्रकार से उसके दर्शन पूरे होते हैं। हम अतीतवाद से आरंभ करके चारों दृष्टिकोणों को एक-एक करके देखेंगे।

अतीतवाद

शब्द “अतीत” उन बातों दर्शाता है जो भूतकाल में हुई थीं। इसी प्रकार, अतीतवाद की रणनीति कहती है कि प्रकाशितवाक्य की पुस्तक की अधिकांश भविष्यवाणियाँ अतीत में काफी पहले भूतकाल में पूरी हो गई थीं।

अतीतवाद का एक प्रकार यह कहता है कि प्रकाशितवाक्य 70 ईस्वी में यरूशलेम के विनाश से पहले लिखा गया था, और इसकी अधिकांश भविष्यवाणियाँ उस समय तक पूरी हो चुकी थीं। अन्य प्रकार सुझाव देता है कि ये दर्शन पाँचवीं सदी में रोमी साम्राज्य के पतन में पूरे किए गए थे।

अतीतवाद यूहन्ना के वास्तविक पाठकों पर एक सहायक केंद्र प्रदान करता है। यह प्रकाशितवाक्य 2 और 3 की सात कलीसियाओं के विषय में विस्तृत ज्ञान के महत्व को देखता है। यह हमें उस वास्तविक सताव की याद दिलाता है जिनका उन कलीसियाओं ने अनुभव किया था। और यह प्रकाशितवाक्य 2 और 3 तथा शेष पुस्तक के बीच विषयात्मक संबंध बनाता है। अतीतवाद सही रूप में बल देता है कि यूहन्ना केवल भावी पीढ़ियों के लिए ही नहीं लिख रहा था, और कि यूहन्ना के मूल पाठकों के प्रति मसीह की चिंता और उनका उत्साह इस पुस्तक के वर्तमान प्रयोग में लाभदायक होना चाहिए। और अतीतवाद के अधिकांश प्रकार सही रूप में समझते हैं कि प्रकाशितवाक्य के अंतिम अध्याय मसीह के भविष्य के पुनरागमन आगमन के बारे में बात करते हैं।

हम प्रकाशितवाक्य के इस दृष्टिकोण से वर्तमान के बहुत से उपयोगी प्रयोगों को प्राप्त कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, यह हमें अब भी परमेश्वर के चरित्र के बारे में सिखा सकता है, और यह भी कि वह कैसे धर्मियों को पुरस्कार और दुष्टों को दंड देता है। यह हमें इस बात को समझने में सहायता कर सकता है कि इस संसार के संकटों में हमें कैसे प्रत्युत्तर देना है, और यह हमें मसीह के भावी पुनरागमन में आशा भी दे सकता है।

परंतु इन सब बहुमूल्य विचारों के बावजूद भी, अतीतवाद प्रकाशितवाक्य पर संपूर्ण दृष्टिकोण को प्रदान नहीं करता है। एक तो यह है कि यह अक्सर गलत अनुमान लगाता है कि प्रकाशन-संबंधी साहित्य दूर के भविष्य के विषय की अपेक्षा केवल अपने ही समय के विषय में लिखा जाता है। परंतु सच्चाई यह है कि दानिय्येल 7-12 और मत्ती 24 और 2 थिस्सलुनीकियों 1 और 2 सहित पवित्रशास्त्र के बहुत से प्रकाशन-संबंधी अनुच्छेद दूर भविष्य की घटनाओं को दर्शाते हैं।

इसी प्रकार, अतीतवाद ऐसे अस्थाई कथनों की अपनी व्याख्या में बहुत संकीर्ण है, जैसे प्रकाशितवाक्य 1:1-3 में "समय निकट है" और फिर प्रकाशितवाक्य 22:10 के अंत में भी। अतीतवाद बल देता है कि ऐसे कथन मसीह के पहले और दूसरे आगमन के बीच के पूरे समय को नहीं दर्शाते हैं — यद्यपि वह समय अंतिम न्याय के "ठीक पहले" का समय है। यही नहीं, अतीतवाद सामान्यतः यह नहीं मानता कि यह घटनाक्रम ऐतिहासिक अनिश्चितताओं के द्वारा परिवर्तित हो सकता है। इसके फलस्वरूप, दूर भविष्य पूर्णताओं की उपेक्षा करने और केवल मूल पाठकों के संदर्भ की पूर्णताओं की अपेक्षा करने की प्रवृति रखता है।

प्रकाशितवाक्य की अपनी व्याख्या की प्रवृति के कारण, अतीतवाद के पास पहली सदी से लेकर परमेश्वर के राज्य के विकास के बारे में कहने के लिए कुछ नहीं है। यह पूरे इतिहास के दौरान मसीहियों

को उन तरीकों में तैयार नहीं करता जिनमें प्रकाशितवाक्य की अधिकांश भविष्यवाणियाँ उनके जीवनकाल में पूरी हो सकती हैं। यह निरंतर होने वाली शहादत और निरंतर विरोध की अपेक्षा को भी उत्पन्न नहीं करता है। इन और अन्य रूपों में अतीतवाद हमें वर्तमान प्रयोग के उन पूरे दायरों को प्रदान नहीं करता जो प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में देने के लिए है।

अतीतवाद की इस समझ को ध्यान में रखते हुए, आइए हम भविष्यवाद की ओर मुड़ें।

भविष्यवाद

भविष्यवाद वह मानता है कि प्रकाशितवाक्य के दर्शन तब तक पूरे होने आरंभ नहीं होंगे जब तक मसीह के दूसरे आगमन से ठीक पहले होनेवाला अंतिम संकट घटित नहीं होगा।

अतीतवाद के समान, भविष्यवाद के पास अच्छे विचार हैं। यह सही रूप में कहता है कि सब बातों से बढ़कर प्रकाशितवाक्य यीशु मसीह के पुनरागमन की बड़ी घटना की प्रतीक्षा करता है। हम इस मुख्य विचार को प्रकाशितवाक्य 22:20 जैसे अनुच्छेदों में देखते हैं।

भविष्यवाद भी सही रूप में अंतिम न्याय, और संपूर्ण सृष्टि की अंतिम पुनर्स्थापना के एक भावी दिन की प्रतीक्षा करता है, जिसकी पुष्टि पवित्रशास्त्र के अन्य भागों, जैसे कि रोमियों 8:19-25, में की गई है।

इन व्याख्याओं को कई उपयोगी तरीकों से लागू किया जा सकता है। वे हमें मसीह के भावी पुनरागमन, न्याय और सृष्टि के नवीनीकरण में आशा प्रदान करती हैं। और वे इतिहास के सब समयों के मसीहियों को इस समय की प्रतीक्षा करने के लिए उत्साहित करती हैं।

परंतु इन बहुमूल्य योगदानों के बावजूद भी भविष्यवाद उन तरीकों को अनदेखा कर देता है जिनमें प्रकाशितवाक्य की पुस्तक ने अपने मूल पाठकों से बात की थी। वास्तव में, यह मसीह के पुनरागमन से पहले की पीढ़ी के अतिरिक्त अन्य पीढ़ियों के वर्तमान प्रयोगों को महत्वहीन करने की प्रवृति रखता है — यद्यपि यूहन्ना ने नामसहित सात प्राचीन कलीसियाओं का उल्लेख किया, और प्रत्येक को विशेष तौर पर संबोधित किया। अध्याय 2 और 3 में उल्लिखित सात कलीसियाओं के लिए यह विश्वास करना कठिन होगा कि यह पुस्तक उनकी परिस्थिति को ध्यान में रखकर नहीं लिखी गई थी। इस तरह से, भविष्यवाद प्रकाशितवाक्य की पुस्तक को पूरे इतिहाम के अधिकांश पाठकों के लिए काफी अप्रासंगिक बनाता प्रतीत होता है।

अब जबकि हमने अतीतवाद और भविष्यवाद की जाँच कर ली है, इसलिए आइए हम वर्तमान प्रयोग की तीसरी सामान्य रणनीति को देखें, जिसे हमने इतिहासवाद कहा है।

इतिहासवाद

इतिहासवाद अनुमान लगाता है कि प्रकाशितवाक्य के दर्शन पहली सदी से लेकर मसीह के दूसरे आगमन तक कलीसिया के इतिहास की क्रमानुसार रूपरेखा प्रदान करते हैं।

इतिहासवाद विशेषकर यह कहता है : प्रकाशितवाक्य 2-12 पहली कुछ सदियों की घटनाओं से संबंधित हैं; अध्याय 13-17 प्रोटेस्टेंट सुधाररयुग से संबंधित हैं; और अध्याय 18-22 दूसरे आगमन के चारों ओर की घटनाओं से संबंधित हैं।

इतिहासवाद कई बहुमूल्य विचार प्रदान करता है। यह सही रूप में देखता है कि प्रकाशितवाक्य सात कलीसियाओं की परिस्थितियों से आरंभ होता है। यह प्रकाशितवाक्य के अंतिम दृश्यों को भी सही रूप में मसीह के दूसरे आगमन के साथ जोड़ता है। और यह सही रूप में ध्यान देता है कि प्रकाशितवाक्य एक चरमोत्कर्ष की ओर बढ़ता है — अर्थात् जैसे-जैसे हम पूरी पुस्तक को पढ़ते हैं तो एक नाटक विकसित होता है।

इतिहासवाद स्वीकार करता है कि प्रकाशितवाक्य की पुस्तक सभी युगों की कलीसियाओं के लिए है। यह हमें यीशु के पुनरागमन तक दृढ़ बने रहने, और इस बात की पुष्टि करने के लिए उत्साहित करता है कि वह उस समय स्वर्ग और पृथ्वी को नया बनाएगा। और यह हमें स्मरण दिलाता है कि परमेश्वर इतिहास पर नियंत्रण रखता है और उसकी योजना पूरी हुए बिना नहीं रह सकती।

परंतु इतिहासवाद अन्य तरीकों से समस्यात्मक है। एक बात तो यह है कि यह मानता है कि प्रकाशितवाक्य की सारी भविष्यवाणियाँ समय के आधार पर क्रमानुसार ही है। यह पहली सदी से लेकर अंतिम सदी तक एक समयरेखा खींचने और बीच के दर्शनों को सांसारिक इतिहास के साथ जोड़ने के द्वारा आरंभिक कलीसिया, सुधार युग और मसीह के पुनरागमन के बीच के ख़ाली स्थानों को भर देता है।

परंतु जैसा कि हमने पहले इस अध्याय में देखा था, प्रकाशितवाक्य की पुस्तक की संरचना पूरी तरह से कालक्रमानुसार नहीं है। यह मसीहियों को इस विषय में एक झूठा भाव प्रदान कर सकता है कि वे छुटकारे के इतिहास में कहाँ हैं, कई बार यह उन्हें अनुचित निराशावाद की ओर, तो कई बार अनुचित आशावाद की ओर ले जाता है। यह एक ऐसे भाव को भी उत्पन्न कर सकता है कि हम प्रकाशितवाक्य में दिए गए कालक्रम से भटक नहीं सकते, मानो कि हमारे अपने कार्य परमेश्वर को दया करने या क्रोधित करने के लिए प्रेरित करने में असमर्थ हैं, और इतिहास के स्पष्ट बहाव को बदलने में असमर्थ हैं।

इतिहासवाद के साथ दूसरी समस्या यह है कि यह मसीह की विश्वव्यापी कलीसिया के इतिहास के एक मुख्य बिंदु के रूप में प्रोटेस्टेंट सुधारवाद पर निर्भर है। इतिहासवाद सार्वभौमिक कलीसिया की उपेक्षा करता प्रतीत होता है, जिसके कारण यह अक्सर यूहन्ना की भविष्यवाणियों को पाश्चात्य मसीहियत की घटनाओं में सीमित कर देता है — और कई बार तो केवल यूरोपीय मसीहियत की घटनाओं में ही। यह दृष्टिकोण गलत रूप में संसार के अन्य क्षेत्रों में कलीसिया की भूमिका को महत्वहीन कर देता है। और यह बहुत ही ज्यादा निराशाजनक हो सकता है। यह विश्वासियों के मन में यह डाल सकता है कि उनके कार्य महत्वहीन हैं, और उनसे पूरे संसार में परमेश्वर के राज्य की निरंतर बढ़ोतरी का अनुसरण करने के महत्वपूर्ण उद्देश्य को छीन लेता है।

अतीतवाद, भविष्यवाद और इतिहासवाद को देखने के बाद, आइए हम वर्तमान प्रयोग की चौथी सामान्य रणनीति की ओर अपना ध्यान केंद्रित करें : आदर्शवाद।

आदर्शवाद

यह दावा करने की अपेक्षा कि प्रकाशितवाक्य एक अवधि या दूसरी अवधि की घटनाओं को दर्शाता है, आदर्शवाद कहता है कि प्रकाशितवाक्य के दृश्य विशेष घटनाओं या कालक्रमों को नहीं बल्कि आत्मिक युद्ध के सामान्य नमूनों को दर्शाते हैं।

अन्य सामान्य रणनीतियों के समान, आर्दशवाद भी कुछ बहुमूल्य विचार प्रदान करता है। यह प्रकाशितवाक्य की पुस्तक की कुछ भविष्यवाणियों की विषयात्मक व्यवस्था को स्वीकार करता है। और यह इस तथ्य को उजागर करता है कि शैतान के तरीके वास्तव में पूरे इतिहास में एकरूपता में चलते हैं, जिससे यह उन्हें पहले से जानने योग्य बना देता है।

आदर्शवाद नए नियम के आरंभ हुए युगांत के सामान्य नमूने को स्वीकार करता प्रतीत होता है जिसके बारे में हम इस श्रृंखला में पहले चर्चा कर चुके हैं। और यह पहली सदी और अंतिम संकट की विशेष परिस्थितियों से परे उनका सामान्यीकरण करने के द्वारा हमारी वर्तमान परिस्थिति में प्रकाशितवाक्य के वर्तमान प्रयोग पर बल देता है। ये विचार प्रकाशितवाक्य को वैसे पढ़ने और उसका उपयोग करने की हमारी योग्यता को बढ़ाते हैं जैसे यूहन्ना ने चाहा था। ये परमेश्वर के चरित्र और संसार के साथ उसके व्यवहार की प्रकृति पर ध्यान देने में हमारी सहायता करते हैं। वे इतिहास के सब समयों में हमें उसके लिए जीने, और अंत में मसीह के पुनरागमन की आशा रखने के लिए तैयार करते हैं।

परंतु आदर्शवाद में भी कुछ कमियाँ हैं। शायद सबसे स्पष्ट यह है कि यह प्रकाशितवाक्य के किसी भी प्रतीक की पहचान ऐतिहासिक घटनाओं के साथ करने में असफल हो जाता है। कम से कम यूहन्ना के मूल पाठकों को उसके भविष्य के प्रकाशन की आवश्यकता थी ताकि वे उन घटनाओं का अर्थ समझ सकें जो उनके समय में हो रही थीं। और प्रकाशितवाक्य की पुस्तक की रचना स्पष्ट रूप से इस प्रकार के विचार को प्रदान करने के लिए की गई थी, जिसमें यह कई बार दावा करती है कि परमेश्वर यहून्ना के समक्ष उसे समझाने का तरीका प्रकट कर रहा था "जिनका शीघ्र होना अवश्य है।" हम इसे पुस्तक के आरंभ में ही, प्रकाशितवाक्य 1:1 में और साथ ही समाप्ति के निकट 22:6 में देखते हैं। जैसा कि हम प्रकाशितवाक्य 22:6 में पढ़ते हैं।

> प्रभु ने, जो भविष्यद्वक्ताओं की आत्माओं का परमेश्वर है, अपने स्वर्गदूत को इसलिये भेजा कि अपने दासों को वे बातें, जिनका शीघ्र पूरा होना अवश्य है, दिखाए **(प्रकाशितवाक्य 22:6)**।

ऐसे पदों से स्पष्ट हो जाना चाहिए कि प्रकाशितवाक्य की पुस्तक ऐसी कई वास्तविक घटनाओं से सीधे-सीधे संबंधित है जो स्वाभाविक संसार में घटित होती हैं। परंतु आदर्शवाद हमें इन अनुच्छेदों से इस प्रकार के वैध वर्तमान प्रयोगों को निकालने की अनुमति नहीं देता है।

अब जबकि हमने वर्तमान जीवन में प्रकाशितवाक्य की पुस्तक की व्याख्या करने और उसे लागू करने की चार सामान्य रणनीतियों को देख लिया है, इसलिए हम एक एकीकृत रणनीति का सुझाव देने के लिए तैयार हैं।

एकीकृत रणनीति

हमारी एकीकृत रणनीति यह मानते हुए आरंभ होती है कि अतीतवाद, भविष्यवाद, इतिहासवाद और आदर्शवाद सब प्रकाशितवाक्य के आधुनिक प्रभाव की हमारी समझ में उपयोगी योगदान देते हैं। अत: इन रणनीतियों को पूरी तरह से अस्वीकार करने की अपेक्षा एकीकृत रणनीति इन सभी दृष्टिकोणों के बहुमूल्य विचारों को आपस में जोडती हैं, और साथ ही उनकी कमियों को दूर करती है।

हम इस बात में अतीतवाद से सहमत हैं कि प्रकाशितवाक्य की भविष्यवाणियाँ एशिया माइनर की सात कलीसियाओं से संबंधित थीं जिन्होंने सबसे पहले इस पुस्तक को प्राप्त किया था। परंतु साथ ही हम भविष्यवाद से भी सहमत हैं कि प्रकाशितवाक्य की कुछ भविष्यवाणियों ने मसीह के पुनरागमन और अंतिम न्याय के आस-पास की घटनाओं के बारे में भी बात की है। और हम इतिहासवाद से सहमत हैं कि परमेश्वर सारे इतिहास पर नियंत्रण रखता है, जो इसे मसीह के पुनरागमन में अंत की ओर लेकर जा रहा है। और हम आदर्शवाद से सहमत हैं कि प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में दर्शाई गईं बुराई की शैतानी शक्तियाँ आज भी हमें विश्वास के साथ समझौता करने की परीक्षा में डालती हैं।

हम वर्तमान प्रयोग की एकीकृत रणनीति को दो भागों या चरणों से बने हुए होने के रूप में सारगर्भित कर सकते हैं। पहला, हम प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के सत्यों और सिद्धांतों को समझने के लिए प्रत्येक उपलब्ध माध्यम का प्रयोग करते हैं। वे परमेश्वर के चरित्र के विषय में सत्य, संसार के साथ उसके व्यवहार के विषय में सत्य, उसके समक्ष हमारे कर्त्तव्यों के सत्य, इतिहास के घटनाक्रम के विषय में सत्य, या कुछ और हो सकता है जिसे यूहन्ना ने प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में सिखाया है। और दूसरा, हम यूहन्ना के मूल पाठकों की परिस्थितियों और हमारे अपने जीवनों की परिस्थितियों की समानांतर बातों को खोजते हैं। और वे समानांतर बातें हमारे वर्तमान प्रयोग का मार्गदर्शन करती हैं।

प्रकाशितवाक्य के सिद्धांतों और सत्यों को समझने का पहला चरण काफी जटिल हो सकता है, क्योंकि यह पुस्तक बहुत से विचारों को सिखाती है। अत: हमारे लिए कुछ ऐसे अधिक महत्वपूर्ण विषयों

का उल्लेख करना सहायक होगा जिन पर यूहन्ना ने बल दिया है। इन विषयों को प्रासंगिक रूपों में आधुनिक जीवन में लागू करना आसान हैं।

उदाहरण के लिए, हम इस सच्चाई को देख सकते हैं कि मसीह के जीवन, उसकी मृत्यु, उसके पुनरुत्थान, और स्वर्गीय शासन ने उसे संपूर्ण आराधना प्राप्त करने के योग्य बना दिया है।

हम इस विचार पर भी ध्यान केंद्रित कर सकते हैं कि बुराई पर मसीह की पूर्ण विजय निश्चित है, और यह कि उसके राज्य का कभी अंत नहीं होगा। हम यह जानते हुए इस संसार में कार्यरत उन सभी शैतानी शक्तियों के विरुद्ध खड़े हो सकते हैं जो हमें उनकी आराधना करने के लिए फंसाने का प्रयास करती हैं कि वे अपने अनुयायियों को आशीष देने की अपेक्षा गुलाम और श्रापित बना देती हैं। और हम याद कर सकते हैं कि जो इस जीवन में मसीह के प्रति विश्वासयोग्य हैं, वे अगले जीवन में महिमामय पुरस्कार प्राप्त करेंगे।

हम यह जानते हुए कठिनाइयों में दृढ़ बने रहने के लिए प्रेरित हो सकते हैं कि जो सताव हम सहते हैं वह परमेश्वर के शत्रुओं के विरूद्ध उसके प्रकोप की तुलना में कुछ नहीं है। हम इस तथ्य में विश्राम प्राप्त कर सकते हैं कि परमेश्वर के विश्वासयोग्य लोग उसके भयानक दंड से सुरक्षित बचाए जाएँगे। यहाँ हम इस ज्ञान से आशा प्राप्त कर सकते हैं कि एक दिन पाप का श्राप इस संसार से हटा दिया जाएगा, और परमेश्वर अपने लोगों के बीच सिद्ध शांति और धार्मिकता में वास करेगा। और इसी बीच, हम आश्वस्त हो सकते हैं कि परमेश्वर अपनी कलीसिया की अनवरत गवाही को आशीषित करेगा, और इसका प्रयोग अपने पर विश्वास करने के लिए और अधिक लोगों को लेकर आएगा।

यूहन्ना के मूल पाठकों और वर्तमान पाठकों के बीच समानताओं को ढूँढने का दूसरा चरण भी जटिल हो सकता है, क्योंकि वहाँ ध्यान देने के लिए बहुत से विवरण हैं। अत: इससे इन संबंधों को स्थापित करने में एक उत्तरदायी रणनीति बनाने में सहायता हो सकती है।

> रोमी साम्राज्य और आधुनिक संसार में रोचक समानताएँ हैं, जो हमें प्रकाशितवाक्य की सीखों को आधुनिक जीवन में लागू करने की अनुमति देती हैं। मेरे विचार से इनमें से सबसे महत्वपूर्ण यह है कि आपके पास पहली सदी की एक ऐसी परिस्थिति है जहाँ एक शत्रुतापूर्ण प्रशासन है, जो कलीसिया का विरोधी है। कलीसिया विस्तृत समाज में एक भटका हुआ समुदाय है जिसे प्रशासन के द्वारा नियमित रूप से सताया जाता है। मेरे विचार से, वह ऐसी बात है जो वर्तमान संसार के बहुत से मसीहियों का एक सामान्य अनुभव है और यह अगली सदी में पाश्चात्य देशों में और भी अधिक सामान्य हो जाएगा। अतः प्रकाशितवाक्य की पुस्तक की सीख, कि मत्ती 16:18 की प्रतिज्ञा कि कलीसिया प्रबल होगी, कि अंततः कलीसिया ही इतिहास का अर्थ है — कि प्रकाशितवाक्य की पुस्तक की सीख यह है जो उस कलीसिया के लिए और अधिक प्रासंगिक हो जाएगी जो स्वयं को उपेक्षित और समाज से बाहर धकेला हुआ देखती है।
>
> — डॉ. कार्ल आर. ट्रूमैन

> मेरे विचार से यद्यपि हम प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के संसार और इसके आरंभिक लेखों के समय से दो हजार वर्ष आगे आ गए हैं, फिर भी उस समय के रोमी साम्राज्य और हमारे वर्तमान युग में कुछ समानताएँ पाई जाती हैं, उनमें से एक तथ्य यह है कि दोनों विषयों में जीवन बहुत ही विविध लोगों से भरा हुआ है, इसमें आंतरिक तनाव है, और धनवानों तथा गरीबों, विशेषाधिकृत तथा उपेक्षित लोगों के बीच बहुत ही बड़ा अंतर है। पहली सदी में बहुत अधिक गतिविधि है —

> यद्यपि कुछ गतिहीन तत्व भी हैं — लोग चलायमान हैं, यात्री हैं, व्यापारी हैं, लोग स्वेच्छा से या कई बार मजबूरी में अपने जन्म स्थान को छोड़कर दूसरे स्थानों में जाकर रहे हैं। इस प्रकार, मेरे विचार से बहुत से ऐसे सामाजिक पहलू और भाषाई पहलू हैं जो हमसे बात करते हैं
>
> — डॉ. जेम्स डी. स्मिथ III

हमारे और यूहन्ना के मूल पाठकों के बीच पाई जानेवाली छोटी मोटी समानताओं के अतिरिक्त कम से कम तीन ऐसी मुख्य समानताएँ हैं जो हमारे वर्तमान प्रयोग का मार्गदर्शन करने में सहायता कर सकती हैं।

पहली, जिस परमेश्वर ने पहली सदी में सृष्टि पर शासन किया था वह आज भी संसार पर शासन करता है। वह आज भी इतिहास को नियंत्रण में रखता है। वह आज भी अपने लोगों को बचाता है। वह आज भी प्रार्थना का उत्तर देता है। और वह आज भी हमारी विश्वासयोग्यता, धन्यवाद और स्तुति को प्राप्त करने के योग्य है।

दूसरा, वही पतित, पापमय संसार जिसने एशिया माइनर की कलीसियाओं को परेशान किया था, आज भी मसीहियों को निरंतर परेशान कर रहा है। हम अभी भी बुराई की आत्मिक शक्तियों का सामना करते हैं। हम आज भी प्रकृति में होनेवाली घटनाओं के कारण कठिनाइयाँ सहते हैं। हम आज भी बीमारियों और भूख से लड़ते हैं।

और तीसरा, मनुष्य आज भी वैसे ही हैं। हम आज भी पापी हैं जिन्हें छुटकारे, चंगाई, और परमेश्वर के साथ एक पुनर्स्थापित संबंध की आवश्यकता है। ऐसी समानताएँ प्रकाशितवाक्य की पुस्तक को उतनी ही प्रासंगिक बनाती हैं जितनी यह पहली सदी में थी।

बहुत से विभिन्न रूपों में, प्रकाशितवाक्य की पुस्तक प्रत्येक युग के सभी मसीहियों को आशा प्रदान करती है। इसके संदेश समय से परे हैं, सदा प्रासंगिक हैं और हमारे लिए उतने ही सामर्थी हैं जितने वे एशिया माइनर की सात कलीसियाओं के लिए थे। प्रकाशितवाक्य हमें प्रत्येक परिस्थिति में मसीह के प्रति विश्वासयोग्य बने रहने के लिए उत्साहित कर सकता है। और यह हमें भविष्य के लिए आशा प्रदान कर सकता है। हमारे जीवन कई बार कितने भी बुरे क्यों न दिखें, हम वास्तव में विजय की ओर हैं। और यह आशा हमें बनाए रख सकती है, क्योंकि हम जानते हैं कि एक दिन मसीह हमें अपने वारिसों और अपनी सिद्ध, स्थाई नई सृष्टि के शासकों के रूप में आशीषित करने के लिए वापस आएगा।

उपसंहार

इस अध्याय में हमने आशीषों के प्रस्तावों और श्रापों की चेतावनियों के आधार पर प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के उद्देश्य की जाँच की है; हमने इसकी विषय-वस्तु के विवरणों का सर्वेक्षण किया है; और हमने वर्तमान प्रयोग की कुछ प्रचलित रणनीतियों, और फिर एक एकीकृत रणनीति पर ध्यान देने के द्वारा इसके आधुनिक वर्तमान प्रयोग पर विचार किया है।

इस पूरे अध्याय में हमने देखा है कि प्रकाशितवाक्य हमें परमेश्वर की अंतिम विजय के प्रति आश्वस्त करता है, हमारी दृढ़ता को उत्साहित करता है, और मसीह के पुनरागमन के लिए हमारी चाहत को बढ़ाता है। हमारी भावी आशीष निश्चित है। और जब हम परीक्षा में पड़ते हैं या फिर सताए भी जाते हैं तो यह हमें राहत और दृढ़-निश्चय प्रदान कर सकती है। परमेश्वर कभी नहीं चाहता था कि यह पुस्तक

मसीहियों को धर्मवैज्ञानिक विभिन्नताओं के आधार पर विभाजित कर दे। इसका उद्देश्य प्रत्येक युग के प्रत्येक विश्वासी को उत्साहित करना था कि वह उसके प्रति विश्वासयोग्य आज्ञाकारिता में जीए, और हमारे उद्धारकर्ता, यीशु मसीह के महिमामय पुनरागमन में आशा रखे।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।